• वर्ष ६८ • अंक १९ • मूल्य ₹ २०

अक्टूबर (प्रथम) २०२५

पाक्षिक

परोपकारी

महान् समाज सुधारक, आर्य समाज के संस्थापक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

'योग-ध्यान स्वाध्याय शिविर'

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान, अजमेर में दिनांक ०१ से ०७ सितम्बर २०२५ तक आयोजित

'योग-ध्यान स्वाध्याय शिविर'

इस योग-साधना शिविर में योग सम्बन्धी विषयों का वैदिक-दर्शनों व उपनिषदों के द्वारा ज्ञान करवाया गया उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया गया। यह शिविर साधना को उन्नति में विशेष साधन बना, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगे।

इस शिविर में निम्न प्रशिक्षक का सान्निध्य प्राप्त हुआ - ०१ आशुतोष सरस्वती, ०२ स्वामी विदेह योगी, ०३ डॉ. वेदप्रकाश विद्यार्थी, ०४ आचार्य अंकित प्रभाकर, ०५ आचार्य सत्यनिष्ठ आर्य व संयोजक - स्वामी ओमानन्द सरस्वती।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुखपत्र

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

वर्ष : ६७ **अंक :** १९

दयानन्दाब्द: २०१

विक्रम संवत् आश्विन शुक्ल २०८२

कलि संवत् - ५१२६

सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,१२६

▪

सम्पादक

डॉ. वेदपाल

▪

प्रकाशक- परोपकारिणी सभा,

केसरगंज, अजमेर- ३०५००१

दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

०८८९०३१६९६१

▪

मुद्रक- डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा

वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

९४१४००३४६८

▪

परोपकारी का शुल्क

भारत में

एक वर्ष-४०० रु.

पाँच वर्ष-१५०० रु.

आजीवन (२० वर्ष) -६००० रु.

एक प्रति - २०/- रु.

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०

०७८७८३०३३८२

ऋषि उद्यान : ०१४५-२९४८६९८

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

अक्टूबर प्रथम, २०२५

अनुक्रम

०१. कैकेयी??	सम्पादकीय	०४
०२. बना त्रिगुणमय यह संसार	डॉ. रामवीर	०५
०३. बहुमुखी प्रतिभा के धनी, आर्यसमाज...	कन्हैयालाल आर्य	०६
०४. महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी और...	डॉ. महावीर मीमांसक	१४
०५. पितर और उनका श्राद्ध	आ. रामनिवास गुणग्राहक	१६
०६. जीव	स्वामी स्वतन्त्रानन्द	१९
०७. पुस्तक - समीक्षा		२२
* साधना, स्वाध्याय, सहयोग के लिए निमन्त्रण		२२
०८. पुरुष अध्याय - यजुर्वेद ३१-१२	डॉ. धर्मवीर	२३
* नवीन प्रकाशन पर ५० प्रतिशत की विशेष छूट		२६
०९. १४२ वाँ ऋषि बलिदान समारोह		२७
१०. वेदगोष्ठी-२०२५		२९
११. ऋषि मेला स्टॉल आवंटन		३१
* परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर विशेष छूट		३२
* प्रवेश सूचना		३२
१२.संस्था की ओर से....		३३
* 'सत्यार्थ प्रकाश' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति		३४

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ
www.paropkarinisabha.com→gallery→videos

'परोपकारी' पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं। इन्हें सम्पादकीय नीति नहीं समझा जाये। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

कैकेयी??

परोपकारी अगस्त प्रथम २०२५ पृष्ठ २८-२९ पर प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् स्वर्गीय आचार्य उदवीर शास्त्री का- "रामायण का मुख्य घटक कैकेयी" (कतिपय सुझाव युक्त) लेख प्रकाशित हुआ है। इसी विषय पर डॉ. सुरेन्द्र कुमार (पूर्व कुलपति गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार) का "निष्कलंक कैकेयी : रामायण क्या कहती है" पृष्ठ ५-८ परोपकारी सितम्बर प्रथम २०२५ प्रकाशित हुआ है।

आचार्य उदयवीर शास्त्री ने श्री गजानन्द आर्य के अभिमत-"किसी नियत निर्देशानुसार राम अयोध्या से चलकर लंका तक पहुँचे, वहाँ से पुनः नियत समय में अयोध्या वापस आ गए। राम के वन गमन के विषय में कैकेयी का चरित कलुषित बना दिया गया है। राम के वन भेजने में कैकेयी का कोई स्वार्थ नहीं था। अपितु भरत की अपेक्षा राम के प्रति उसका आन्तर स्नेह अधिक था। आदि-आदि।"

डॉ. सुरेन्द्र कुमार ने वाल्मीकि रामायण के आधार पर कैकेयी चरित का याथातथ्य प्रस्तुतीकरण किया है। इसके अनुसार मन्थरा के उत्प्रेरण से प्रेरित हो कैकेयी ने ही यह सब किया। इसीलिए उसे कुटिला, कुलघातिनी आदि विशेषणों से विशेषित किया गया है और वह सहानुभूति की पात्र नहीं है।

श्री गजानन्द आर्य की पुस्तक हमारे सामने नहीं है। आचार्य उदयवीर द्वारा उद्धृत सन्दर्भ के विषय में ही कुछ विचार प्रस्तुत हैं-

ब्रह्मचारी कृष्णदत्त (लाक्षागृह बरनावा, बागपत) जो योगमुद्रा (शवासन) में कुछ मिनट लेटने के पश्चात् दोनों ओर सिर हिलाते हुए प्रवचन करते थे। वह विधिवत् शिक्षित नहीं थे। इनके प्रवचनों को टेप करके अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हैं। इनके अनुसार-

रावण के आततायीपन को लेकर अयोध्या के भयंकर वन में महर्षि विभाण्डक के आश्रम में देवर्षि नारद, महर्षि वशिष्ट, महर्षि विश्वामित्र, जमदग्नि, भारद्वाज (शेष नाम हमने छोड़ दिए हैं- सम्पादक) आदि ऋषिगण की सभा हुई। इसमें ऋषि मुनियों ने महर्षि विश्वामित्र को राम-लक्ष्मण को लेकर धनुर्याग करने के लिए निर्देशित किया इसमें भारद्वाज ने वारुणास्त्र, ब्रह्मास्त्र प्रदान करने का वचन दिया। साथ ही शिव (रावण के गुरु) ने रावण के प्रति किसी प्रकार की सहानुभूति न रखने का वचन दिया। द्र. ९ अक्टूबर ८१ का प्रवचन ४ अगस्त १९८१,

अमृतसर प्रवचन के अनुसार महर्षि विश्वामित्र दशरथ के यहाँ गए और धनुर्याग करने के लिए राम-लक्ष्मण को ले जाने का विचार प्रकट किया। राजा के बालक किशोर हैं इस प्रकार कहने पर कौशल्या ने प्रसन्न होकर राजा से कहा- राजन्! आप मोह क्यों करते हैं? राजन्! दोनों किशोरों को ऋषि को प्रदान कर दीजिए।

राम-लक्ष्मण के विश्वामित्र के साथ जाने के पश्चात् भारद्वाज ने राम को अस्त्र-शस्त्र प्रदान किए।

-द्र. २३ फरवरी १९८१, लाक्षागृह बरनावा

राज्याभिषेक की घोषणा एवं वनवास- राजा दशरथ द्वारा राम के राजतिलक के लिए मन्तव्य प्रकट करने पर वशिष्ठ ऋषि ने सभा में अपनी सहमति प्रकट की थी। किन्तु उसी रात्रि में ही ऋषि अभ्रेतु ऋषियों का पत्र लेकर मन्थरा के यहाँ पहुँचे और

मन्थरा से कहा– 'हे मन्थरा! ऋषि ने कुछ कहा है, यह पत्र लीजिए।' पत्र देकर अभ्रेतु वापस लौट गए। मन्थरा ने वह पत्र कैकेयी को दे दिया। कैकेयी ने पत्रानुसार उसी मध्यरात्रि में कोप भवन में प्रवेश किया। इसी कारण राम को राजतिलक के स्थान पर चौदह वर्ष का वनवास हुआ।

–द्र. २३ अप्रैल १९७७ अमृतसर

हैदराबाद ६ मार्च १९६९ में ब्रह्मचारी जी के प्रवचन का निम्न अंश भी द्रष्टव्य है–

''भगवान् राम को जब वन प्राप्त हुआ तो माता कैकेयी का दोष नहीं था, यह राजा दशरथ की आज्ञा नहीं थी, यह ऋषियों–मुनियों की आज्ञा थी।''

वाल्मीकीय रामायण के अतिरिक्त अध्यात्म रामायण, आनन्द रामायण, अद्भुत रामायण के साथ ही अनेक काव्य एवं नाटक राम के जीवन अथवा रामायण के किसी अंश को लेकर लिखे गए हैं। किन्तु सबका उपजीव्य वाल्मीकीय रामायण ही है।

राम के वन गमन से सम्बन्धित कैकेयी की निर्दोषता अथवा ऋषिगण की किसी गोपनीय किन्तु जनहितैषी योजना किसी का प्रतिपाद्य विषय नहीं है। ब्रह्मचारी कृष्णदत्त के प्रवचनों में अवश्य ही कैकेयी अथवा मन्थरा का कोई दोष नहीं है। स्यात् गजानन्द जी का आधार ये प्रवचन ही हैं।

रामायण में अनेक प्रक्षेप होते हुए भी अधिकतम प्रामाण्य वाल्मीकीय रामायण का ही स्वीकार्य है। **राम के वनगमन में कैकेयी की भूमिका स्वपुत्र के अभ्युदय की सहज कामना से युक्त मानने में अनौचित्य क्या है? दशरथ द्वारा राजतिलक की इतनी शीघ्रता और भरत को सूचित तक न करना भी तो उचित नहीं कहा जा सकता।**

डॉ. वेदपाल

बना त्रिगुणमय यह संसार

डॉ. रामवीर

बहुत बार चिन्तन के क्षणों में
मन में उठता रहा विचार
क्यों मानव में मानवता कम
होती जाती है लगातार।

क्या मानव की प्रकृति ही है
स्वार्थप्रधान और अनुदार
या कारणवश आ जाते हैं
कभी–कभी मानव में विकार।

क्या कारण है मनुज–मनुज का
अलग–अलग मिलता व्यवहार
किसी–किसी का समझाने पर
भी न सुधर पाता आचार।

हर प्राणी लेकर आता है
जन्म–जन्मान्तर के संस्कार
वे ही उसे डुबा देते हैं
या कर देते नैय्या पार।

कुछ गुण दुर्गुण जन्मजात हैं
कुछ का संगति है आधार
मानव वैसा ही हो जाता
जैसे होते उस के यार।

सद्गुणी और भले मानव से
होता प्रभावित घर परिवार
अच्छाई के अच्छाई से
जुड़ते चले जाते हैं तार।

सत्त्व रजस् औ तमस् से मिलकर
बना हुआ सारा संसार
हो नहीं सकते सभी एक से
बना त्रिगुणमय यह संसार।

८६, सैक्टर–४६, फरीदाबाद (हरि.) मो. ९९११२६८१८६

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, आर्यसमाज के गौरव
पं. जगदेवसिंह सिद्धान्ती

– कन्हैयालाल आर्य

आप का जन्म हरियाणा प्रान्त के प्रसिद्ध नगर रोहतक जिले के बहराणा गाँव में एक वीर सैनिक श्री प्रीतराम तथा धार्मिक माता श्री नामकौर के घर विजयदशमी संवत् १९५७ तदनुसार ३ अक्टूबर १९०० के दिन अहलावत गोत्र में हुआ। माता-पिता ने आप का नाम जगदेव रखा। आपके पिता एक फुर्तीले नवयुवक थे ओर आप घुड़सवार सेना में भर्ती हो गये। तीव्रबुद्धि के कारण हिन्दुस्तानी सेना में सिगनलकोर की परीक्षा में सर्वप्रथम रहे। वहाँ अस्वस्थ हो जाने के कारण पेन्शन लेकर घर आ यगे और अन्य शिक्षा के अतिरिक्त आयुर्वेद में अच्छा अभ्यास नाड़ी विज्ञान के पारंगत वैद्य बन गये और 'नाड़ी विचार' नामक पुस्तक भी लिखी। रोगी की नाड़ी देखकर ही चिकित्सा किया करते थे। चिकित्सा का किसी से एक पैसा भी नहीं लेते थे। इस प्रकार आपकी माता भी धार्मिक विचारों की महिला थी। वह सदैव आपको ईश्वरभक्ति की शिक्षा दिया करती थी। इस प्रकार त्यागी पित एवं धार्मिक माता ने बालक जगदेव को एक दृढ़ आस्तिक और निर्भीक सामाजिक नेता बना दिया।

जब बालक जगदेव ६ वर्ष का हुआ, तब शिक्षा के बहराणा ग्राम में कोई स्कूल नहीं था। आपके पिताश्री ने गाँव वालों के विरोध करने पर घर का एक भाग अध्यापक के निवास के लिए दे दिया। जगदेव परिश्रमी एवं बुद्धिमान था, पाँचवीं की उर्दू परीक्षा चार वर्ष में ही उत्तीर्ण कर ली। तत्पश्चात् बेरी के विद्यालय से मिडिल कक्षा उत्तीर्ण कर जाट हाई स्कूल रोहतक में प्रवेश लिया। वहाँ छात्रावास की दिनचर्या गुरुकुलों के आश्रम जैसी बनी हुई थी। बालक जगदेव को कर्मठ पिता, श्रद्धामयी माता तथा आदर्श शिक्षकों का सौभाग्य एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

जब बालक जगदेव बेरी में शिक्षा प्राप्त कर रहा था तब वहाँ आर्यसमाज के प्रचार की धूम मची हुई थी। पौराणिकों के साथ शास्त्रार्थ होते थे। इन उत्सवों में बालक जगदेव पिताजी के साथ जाया करता था। एक बार बहराणा ग्राम में आर्यसमाज के उपदेशक आये। इन के पिता ने उपदेशक से यज्ञोपवीत लिया और बहराणा में आर्यसमाज की स्थापना कर दी और बालकों के साथ आप ने भी यज्ञोपवीत धारण कर लिया। जगदेव जी उन्हीं दिनों 'बालोपदेश' नामक पुस्तक एक पैसे में खरीदी और एक ही दिन में हिन्दी की वर्णमाला सीख ली साथ ही उर्दू की रामायण और महाभारत पुस्तक भी स्वयं ही पढ़ डाली। इस छोटी आयु में १० वर्ष का होते-होते ही आर्यसमाज का बीज जगदेव जी के जीवन में अंकुरित हो गया।

जब आप १९१६ में हाईस्कूल में पढ़ ही रहे थे तो आपका विवाह १६ वर्ष की आयु में ग्राम बिरोहड़ (रोहतक) के एक कृषक परिवार की कन्या नानती देवी के साथ कर दिया गया। हाईस्कूल की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् पिता वाले संस्कार जागे और आप भी ३५ सिख पलटन के सिपाही के रूप में भर्ती हो गए। उन दिनों अंग्रेज सरकार आर्यसमाज के नाम से चौंकती थी। सेना में और भी सतर्कता बरती जाती थी। जांच-पड़ताल जैलदार से होती थी। जैलदार ने कह दिया कि यह परिवार आर्यसमाजी नहीं, तभी सेना में आपको प्रवेश मिला। सेना में जाकर आर्यसमाज संस्कारों ने जोर पकड़ा, आप सिपाहियों को हिन्दी सिखाने लगे, कुछ समय के पश्चात् सिपाहियों को अंग्रेजी पढ़ानी आरम्भ कर दी इससे जहाँ से भत्ता बढ़ता गया, वहाँ जगदेवसिंह का भारतीय अफसरों तथा सिपाहियों में प्रभाव बहुत बढ़

गया और आप क्वार्टर मास्टर के हैडक्लर्क बन गये।

एक दिन क्वार्टर मास्टर ने वर्कशाप के एक मिस्त्री को आदेश दिया कि चान्दमारी के लिए टार्गेट बनाने हेतु कन्वैसा का कपड़ा बाजार से खरीद लाओ। वह बाजार में हिन्दुस्तानी दुकान से कपड़ा खरीद लाया और बिल क्वार्टरमास्टर को दे दिया। क्वार्टरमास्टर ने पूछा कि कपड़ा अंग्रेजी दुकान से क्यों नहीं खरीदा? मिस्त्री ने उत्तर दिया कि वहाँ कपड़ा महँगा मिलता था। क्वार्टर मास्टर ने कहा कि अंग्रेजी दुकान से कपड़ा खरीदा करो, वहाँ का लाभ अंग्रेजों के देश में पहुँचता है, परन्तु हिन्दुस्तानी दुकान से खरीदे गये सामान का लाभ हमारे देश को मिलता है तब जगदेव सिंह जी ने उस मिस्त्री से कहा कि तुम हिन्दुस्तानी दुकान से सामान लाया करो। उन दिनों इतने बड़े सेना के अफसर को ऐसी बात कहने का साहस जगदेवसिंह जैसा देशभक्त ही कर सकता था।

जब भी जगदेव सिंह जी डोरा कैम्प में युद्ध के मोर्चे पर थे तब यह आदेश दिया गया कि जवानों को मांस अवश्य खिलाना चाहिये। तभी जगदेवसिंह के नेतृत्व में आर्यसमाजी जवानों ने मांस खाने से इन्कार कर दिया। इनका कोर्टमार्शल हो गया। तभी जगदेवसिंह ने अंग्रेज ब्रिगेडियर को 'ब्रिटिश एक्ट' का एक प्रमाण दिया जिसमें लिखा था "किसी के धर्म में दखल न दिया जाये, न जबरदस्ती की जाये।" अंग्रेज ब्रिगेडियर ने तुरन्त कोर्टमार्शल का आदेश वापिस ले लिया। श्री जगदेव सिंह के नेतृत्व में आर्यसमाजी जवानां की इस विजय पर सारी रेजिमेन्ट में हर्ष की लहर दौड़ गयी और मांस भक्षण बन्द हो गया। इस प्रकर लगभग साढ़े चार वर्ष सेना में नौकरी कर सेना से त्यागपत्र देकर घर आ गये और संस्कृत भाषा पढ़ने की रुचि जागृत हो गई। ऋषि दयानन्द के तृतीय समुल्लास को प्राचीन पठन-पाठन विधि से प्रभावित होकर उन्हें यह अनुभव होने लगा कि संस्कृत के अध्ययन के बिना यह जीवन अधूरा है। अब घर में ही हिन्दी दर्शन ग्रन्थों का स्वाध्याय प्रारम्भ कर दिया। खेत में भी धार्मिक पुस्तक साथ रखते थे।

सन् १९२२ में श्री जगदवे जी गुरुकुल मटिण्डु के वार्षिकोत्सव पर गये और एक मास तक निःशुल्क सेवा के लिए वहाँ रहे। वहीं परन पं. शान्तिस्वरूप जी से संस्कृत पढ़ने लगे और एक ही वर्ष में पंजाब विश्वविद्यालय की प्राज्ञ परीक्षा ५३०/६००अंक प्राप्त कर उत्तीण हुई। विश्वविद्यालय के पुराने रिकार्ड टूट गये। अगले वर्ष विशारद परीक्षा की तैयारी प्रारम्भ कर दी। उन्हीं दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने लाहौर में 'दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय' से 'सिद्धान्त विशारद' और 'सिद्धान्त भूषण' परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी से आप का सम्पर्क हो गया और स्वामी जी के आदर्श जीवन की अमट छाप लगी। 'सिद्धान्त भूषण' परीक्षा उत्तीण करने के उपरान्त अपने नाम के साथ 'सिद्धान्ती' उपनाम लगाना आरम्भ कर दिया। और मन में यह भावना आई कि जैसे सत्यार्थप्रकाश श्में 'सिद्धान्ती' वैदिक सिद्धान्तों का मण्डन और वेदविरुद्ध सिद्धान्तों का खण्डन करता है, ऐसे ही मैं करुँगा। ऐसा ही प्रयत्न आजीवन करते रहे।

गुरुकुल मटिण्डू में आप आये तो एक साधारण गणित अध्यापक के रूप में, परन्तु अपने पुरुषार्थ, योग्यता तथा ईमानदारी आदि गुणों से गुरुकुल के संस्थापक आर्य नेता चौ. पीरुसिंह के दाया हाथ बन गये। इससे उनके यश में और वृद्धि हो गई। चौ. पीरु सिंह के देहान्त के पश्चात् भी आप १९२९ तक गुरुकुल मटिण्डु की सेवा करते रहे।

जिन दिनों सिद्धान्ती जी गुरुकुल मटिण्डू में कार्य करते थे। तब वे वेद-प्रचार के लिए सोनीपत के सिलाना ग्राम में गये। उस ग्राम में चौ. अमरसिंह जैलदान एक निष्ठावान् आर्यसमाजी थे, परन्तु उनकी पत्नी किसी उपदेशक को रोटी खिलाना पसन्द नहीं करती थी। चौ. साहब ने सिद्धान्ती जी से पूछा- क्या आप भोजन करेंगे?

सिद्धान्ती जी के कहने पर चौ. साहब ने अपने घर के वातावरण की जानकारी सिद्धान्ती जी को दी। सिद्धान्ती जी ने कहा- यदि आप नाराज न हों तो मैं आपके घर की इस बीमारी की चिकित्सा कर सकता हूँ। जैलदार साहब ने कहा कि इससे बढ़कर और प्रसन्नता की बात मेरे लिए क्या हो सकती है। सिद्धान्ती जी जैलदार साहब के घर भोजन करने चले गये। जैलदार की पत्नी अपनी मनोवृत्ति अनुसार पीतल की थाली करड़ी मेसी रोटी और उस पर गठां रखकर लाई। इस भोजन को देखकर श्री सिद्धान्ती जी ने आवेश में आकर कहा, ''जैलदार साहब के घर में यह भोजन, ऐसा कहते हुए श्री सिद्धान्ती जी ने उस तिरस्कार पूर्ण भोजन की थाली फेंक मारी और कहा कि मैं आर्यसमाज का उपदेशक हूँ। आज से इस इलाके में इस बात का प्रचार करुँगा कि जैलदार के घर खाने पीने को कुछ नहीं। किसी अतिथि का कोई सत्कार नहीं। पता नहीं उनके घर में कौन बड़ रही है। उनके घर में कोई रिश्ता न करें। जब सिद्धान्ती जी यह कहकर चलने लगे तो उस देवी ने घर की चौखट के साथ अपने दोनों हाथ जोड़कर रास्ता रोक लिया और कहा- मुझसे बड़ी भारी भूल हुई है। आप भोजन करके जायें। मैं अभी भोजन बनाती हूँ।'' तब सिद्धान्ती जी के लिए ऊपर का चौबारा खोल दिया गया। उस देवी ने श्रद्धा से उन्हें बैठाया और कांसी की थाली में बढ़िया सब्जी और घी-बूरा ले आई। सिद्धान्ती जी ने तब कहा- हाँ! यह है जैलदार साहब के घर का भोजन। उस दिन के पश्चात् उस देवी ने किसी भी उपदेशक का तिरस्कार नहीं किया। अपितु बड़ी श्रद्धा से सेवा करने लगी। श्री जैलदार साहब के घर का रोग कट गया। यह घटना स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी ने गुरुकुल झज्जर के ५९वें वार्षिकोत्सव (सन् १९७४ ई.) के अवसर पर अतिथि यज्ञ पर भाषण देते हुए श्री सिद्धान्ती जी की उपरोक्त घटना सुनाई।

सन् १९१६ में जब सिद्धान्ती जी जाट हाईस्कूल रोहतक में पढ़ रहे थे, तब उनकी पूज्या माता श्रीमती नामकौर का स्वर्गवास हो गया। सन् १९२५ में पूज्य पिता जी श्री प्रीतराम जी का देहान्त हो गया। पिता जी का वैदिक रीति से अन्त्येष्टि संस्कार किया गया। तत्पश्चात् घर में यज्ञ आदि के अतिरिक्त रूढ़िगत कोई कर्म नहीं किया गया। श्री सिद्धान्ती जी का विवाह संस्कार तो तब हुआ था जब वे जाट हाईस्कूल में पढ़ते थे, परन्तु वह ससुराल १९२२ में आई। प्रभु कृपा से १९२६ में उनके घर एक सुन्दर 'महेन्द्र' नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ, परन्तु डेढ़ वर्ष वर्ष की अवस्था में उसका देहान्त हो गया। जिस प्रकार बालक मूलशंकर को अपनी बहिन तथा चाचा की मृत्यु पर वैराग्य हो गया था वैसी प्रतिक्रिया श्री सिद्धान्ती जी के मन में हुई। उन्हें गृहस्थाश्रम से वैराग्य हो गया। उन्होंने अपनी पत्नी से स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि अब वह अपना शेष जीवन वैदिक धर्म की सेवा में लगाना चाहता हूँ। पति के ऐसे शिवसंकल्प को जानकर उस देवी ने अपने पति की साधना में सहयोगी बन गई और श्री सिद्धान्ती जी ने एक साधु जीवन का मार्ग पकड़ लिया।

आर्य महाविद्यालय किरठल (मेरठ) के मन्त्री श्री मुख्तयार सिंह के छोटे भाई श्री रिसाल सिंह जी की प्रेरणा से सिद्धानती जी आर्य महाविद्यालय किरठल के कार्यभार को सम्भालने के लिए तैयार हो गये, क्योंकि वह स्थान रमणीय था। सिद्धान्ती जी को यह स्थान पसन्द आ गया। चौ. कूडेसिंह और चौ. अमरसिंह जैसे आर्यपुरुषों के आग्रह पर १९२९ में सिद्धान्ती जी ने आर्य महाविद्यालय के आचार्य पद को स्वीकार कर लिया। यहाँ पहले वर्ष स्वयं पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की। धीरे-धीरे जनता संस्था की ओर आकृष्ट होने लगी। सिद्धान्ती जी नियम पालने में कठोर थे। चौ. केहरसिंह प्रधान के कहने पर भी किसी भी विद्यार्थी को नियम विरुद्ध प्रवेश नहीं दिया। प्रधान जी ने सिद्धान्ती जी को बुलाया और उनके नियम पालन की प्रशंसा करते हुए कहा कि अब मुझे विश्वास हो गया कि

यह संस्था अवश्य उन्नति करेगी। इस संस्था का पहले नाम संस्कृत विद्यालय था, परन्तु सिद्धान्ती जी ने चाहे इस विद्यालय में रहने वाले छात्रों को गुरुकुलीय संस्कार दे रहे थे, परन्तु व्यवहार की दृष्टि से इस संस्था का नाम 'आर्य महाविद्यालय' रख दिया। श्री सिद्धान्ती जी के संरक्षण में यह संस्था तीव्र गति से प्रगति करने लगी। कच्चे मकान पक्के मकानों में परिवर्तित होने लगे। श्री सिद्धान्ती जी अपने विद्यार्थियों के साथ सिर पर मिट्टी का टोकरा धर कर मिट्टी डालते, ईंटें ढोते तथा बड़ी लग्न से निर्माण कार्य में स्वयं जुटे रहते थे।

महाविद्यालय में प्रारम्भ से कई वर्ष तक पंजाब विश्वविद्यालय की प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री की परीक्षाएं दिलाई जाती थी। कुछ प्रान्तीय कठिनाईयों के कारण बनारस की प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री और आचार्य की परीक्षाएँ प्रारम्भ कर दी। वहीं अपने गुरु पं. शान्तिस्वरूप तथा प्रसिद्ध आर्यसंन्यासी स्वामी विद्यानन्द जी को भी महाविद्यालय में बुला लिया। श्री सिद्धान्ती जी ने महाविद्यालय के कार्य के साथ-साथ आर्यसमाज के प्रचार का कार्य भी आरम्भ कर दिया। स्वामी विद्यानन्द जी, पं. शान्तिस्वरूप जी, श्री पृथ्वीसिंह बेधड़क, महाशय कदम सिंह, रिसाल सिंह, मलखान सिंह आदि का भी प्रचार में सहयोग लिया। अब यह महाविद्यालय शिक्षा कार्य के साथ-साथ वैदिक धर्म के प्रचार कार्य का भी प्रमुख केन्द्र बन गया।

'सिद्धान्ती जी' किस प्रकार सैद्धान्तिक थे। उनकी कुछ घटनायें यह हैं-

१. एक बार नंगला (छपरौली) के प्रसिद्ध आर्य चौ. नरपतसिंह जी की पुत्री का विवाह संस्कार था। वर पक्ष भी आर्यसमाजी था और वे इलाके के वयोवृद्ध पं. भगवत्प्रसाद जी को संस्कार कराने के लिए साथ लाये थे। चौ. नरपतसिंह जी के अन्तरंग मित्र चौ. अर्जुनसिंह जी यह संस्कार सिद्धान्ती जी से कराना चाहते थे। उन्होंने सिद्धान्ती जी को बुलवा भेजा और कहा कि यदि पं. भगवत्प्रसाद जी से शास्त्रार्थ करने का साहस हो तो आ जायें, अन्यथा नहीं। सूचना पहुँचते ही सिद्धान्ती जी आ पहुँचे। दोनों का शास्त्रार्थ हुआ। श्री सिद्धान्ती जी का पक्ष प्रबल रहा। इससे चौ. नरपत सिंह श्री सिद्धान्ती जी के भक्त बन गये। विवाह के पश्चात् स्वयं महाविद्यालय आये और एक अच्छी राशि देकर विद्यालय का मुख्यद्वार बनवाया। उनके पुत्रों और पत्नी ने एक भव्य यज्ञशाला बनवाई और प्रतिवर्ष महाविद्यालय को अच्छी राशि दान करते रहे। इनके सम्बन्धी चौ. मुन्शीसिंह खेड़ी कामू ने एक सुन्दर पुस्तकालय बनवाया।

२. एक बार छपरौली (मेरठ) चौबीस की पंचायत ने विवाह सम्बन्धी कुछ नियम बनाये। उनमें एक नियम था कि विवाह संस्कार करने वाले पुरोहित को ३ रुपये दक्षिणा दी जाये। यह नियम इसलिए बनाना पड़ा कि कई बार पुरोहित यजमान से दक्षिणा के लिए झगड़ा करते थे। इलाके के सब ब्राह्मणों ने इसका विरोध किया। वहाँ की स्थिति और ब्राह्मणों की हठधर्मिता से सिद्धान्ती जी ने घोषणा कर दी कि इस इलाके के संस्कार वे करायेंगे। इस महाविद्यालय का प्रभाव शाहदरा से लेकर सहारनपुर तथा गंगा-यमुना के बीच बहुत अधिक हो गया।

३. संस्कार का निमन्त्रण कहीं से आता, यदि वह संस्कार रात्रि को होता तो नहीं कराते थे, इसलिए इस इलाके में दिन का संस्कार वैदिक संस्कार का पर्यायवाची बन गया।

४. एक बार एक विवाह संस्कार का निमन्त्रण आया। पता चला कि यह संस्कार वेद विरुद्ध है, क्योंकि एक कन्या का विवाह विधुर से किया जा रहा था। अतः विवाह संस्कार न कराकर वापिस आ गये। चाहे उस संस्कार को कराने वाले जिला मुजफ्फरनगर बोर्ड के सेक्रेटरी चौधरी कुन्दनसिंह जी थे, तो भी परवाह नहीं और वेद विरुद्ध संस्कार नहीं कराया।

५. गुरुकुल झज्जर के स्नातक पं. वेदव्र जी शास्त्री

अपने विवाह संस्कार दिनांक २२ जून १९६४ को श्री सिद्धान्ती जी को संस्कार कराने के लिए निमन्त्रित किया। श्री सिद्धान्ती जी ने कहा कि अब मैं वानप्रस्थ आश्रम में हूं। विवाह संस्कार कराना गृहस्थ आश्रम का कार्य है। अत: मैं विवाह संस्कार नहीं करा सकता। मैं विवाह संस्कार में भी तभी सम्मिलित होऊंगा जब बराती भी वर सहित 5 हों। वेदव्रत जी ने सभी बातें स्वीकार कीं और सिद्धान्ती जी के शिष्य पं. रघुवीरसिंह शास्त्री जी ने कराया, तभी सिद्धानती जी विवाह संस्कार में सम्मिलित हुए, आशीर्वाद दिया श्री सिद्धान्ती जी की वैदिक सिद्धानतों में निष्ठा की जितनी प्रशंसा की जाये, थोड़ी है।

ऋषि दयानन्द के चरण चिह्नों पर चलने वाले परम भक्त थे। यह संसार बड़ा विचित्र है। यह अपने हितकारी लोगों को देखना नहीं चाहता। उनके प्राण हरण करने को उद्यत रहता है। श्री शंकराचार्य, महर्षि दयानन्द को विष दिया गया। स्वामी श्रद्धानन्द जी को गोली मारी गयी। पं. लेखराम जी के पेट में छुरा घोंपा गया। इसी प्रकार सिद्धान्ती जी को भी १९३५ में षड्यन्त्र करके विष दिया गया। विष कम मात्रा में था स्वामी विद्यानन्द जी ने उनसे वमन करा दिया। इस प्रकार सिद्धान्ती के प्राणों को बचा तो लिया गया परन्तु शरीर में गर्मी बढ़ जाने से बवासीर हो गया। श्री सिद्धान्ती जी को विष देने वाले व्यक्ति का पता चल गया। पुलिस इन्सपेक्टर आर्यसमाजी था, अत: वह अपराधी को दण्ड दिलाने के लिए आवश्यक कार्यवाही करना चाहता था, परन्तु श्री सिद्धान्ती जी ने इस अवसर पर अपने महान् आचार्य महर्षि दयानन्द के पथ का अनुसरण करके उस अपराधी व्यक्ति को अभयदान दे दिया और पुलिस इन्सपेक्टर को कार्यवाही करने से रोक दिया।

सीकर प्रजापति यज्ञ- आर्यसमाज के प्रचार से उत्तरप्रदेश तथा हरयाणा के जाटों में जागृति की एक लहर आ गई परन्तु जयपुर के शेखावटी क्षेत्र के जाटों के एक जगह के ५०० से अधिक गांवों में अभी पिछड़ापन था, कोई प्राइमरी पाठशाला न थी। छुआछूत अपनी अधिकतम सीमा पर थी जनता स्वेच्छाधारी शासकों के अत्याचारों से बुरी तरह दबी हुई थी। इसी बीच जाट महासभा ने उत्तरप्रदेश तथा हरियाणा के कुछ आर्यसमाजी कार्यकर्त्ता शेखावटी भेजे। इस क्षेत्र में किसी को सभा या जलसा करने की आज्ञा न थी, परन्तु इस क्षेत्र में एक विशाल यज्ञ कने का निश्चय किया गया। इसका नाम 'प्रजापति यज्ञ' रखा गया। सारे क्षेत्र में घर-घर जा कर घी और आटा एकत्रित किया गया। कुंवर श्री हुकमसिंह जी को इस यज्ञ का 'यज्ञपति' अर्थात् अध्यक्ष बनाया गया। वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली तथा उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान रह चुके थे।

प्रजापति यज्ञ के लिए संयोजकों का निमन्त्रण श्री सिद्धान्ती जी के नाम आया जिसमें लिखा था कि आप अपने २० ब्रह्मचारी तथा अध्यापक वर्ग के साथ पधारें। इसका प्रमुख कारण यह था कि इस यज्ञ से कुछ ही दिन पहले १९३३ में इस महाविद्यालय के छात्र महर्षि दयानन्द निर्वाण अर्द्धशताब्दी समारोह अजमेर में सम्मिलित हुए थे। सीकर के आर्यजन महाविद्यालय की याजक मण्डली से बहुत प्रभावित थे। एक विशाल यज्ञ वेदी बनाई गई। इस विशाल आयोजन को न कवेल राजपूत शासक अपितु वहाँ का ब्राह्मण समाज इसे विफल करने के लिए कटिबद्ध था। सिद्धान्ती जी ने अच्छी व्यूह रचना की और अपनपे एक अति योग्य विद्यार्थी श्री रघुवीरसिंह शास्त्री को जो धाराप्रवाह संस्कृत बोलता था, को लोगों से संस्कृत में वार्तालाप करने का कार्यभार दे दिया। वहाँ के क्षेत्र के पौराणिक पाठशाला के छात्रों को संस्कृत भाषण का अभ्यास कम था अत: सिद्धान्ती जी की यज्ञ कराने वाली टीम की रघुवीर सिंह शास्त्री तथा पं. शान्तिस्वरूप जी का खूब प्रभाव जमा। यह यज्ञ सात दिन चला और आर्यजगत् के बड़े-बड़े एवं क्षेत्र के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। कार्यक्रम अत्यधिक सफल रहा। एक दिन रात्रि सभा में पण्डितों ने सिद्धान्ती जी को यह

चुनौती दी कि क्या हम आपके विद्यार्थी श्री रघुवीर सिंह को कोई विषय दें तो क्या वह तत्काल संस्कृत में भाषण दे सकता है? सिद्धान्ती जी ने चुनौती को स्वीकार किया और विषय दिया गया 'आत्मा' का। इस दार्शनिक विषय पर श्री रघुवीर सिंह जी धाराप्रवाह संस्कृत भाषण सुनकर पण्डित लोग दांतों तले अंगुली दबाने लगे और सिद्धान्ती जी से अच्छी तरह प्रभावित हो गए। इस यज्ञ का परिणाम यह हुआ कि श्री सिद्धान्ती जी तथा आर्य महाविद्यालय किरठल की ख्याति उत्तरप्रदेश के पश्चिमी भाग, राजस्थान और पंजाब में भी फैल गई।

कांठ रियासत का एक मुकदमे ने सिद्धान्ती जी को एक विद्वान् के रूप में ख्याति दी। उनका विषय था 'वर्णों का आधार जन्म नहीं, गुण कर्म स्वभाव होते हैं' सिद्धान्ती जी ने बड़े-बड़े वकीलों के समक्ष वेद-स्मृति और कादम्बरी आदि ग्रन्थों के आधार के आधार पर यह सिद्ध किया कि मानव जनम से ही शूद्र उत्पन्न होता है, परन्तु वह अपने गुण, कर्म, स्वभाव से ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य बन सकता है। प्राचीन शास्त्रों से अनेक प्रमाणों से सिद्धान्ती जी ने सिद्ध किया कि वर्ण स्थिर नहीं है बल्कि कोई भी मेधावी बालक अपनी प्रतिभ एवं विद्या के बल पर द्विजकोटि में किया जा सकता है और इसके विपरीत ब्राह्मण की सन्तान विद्या शून्य होने से 'शूद्र' कहलाये गये। न्यायाधीश महोदय श्री सिद्धान्ती जी के प्रमाण एवं युक्तियों से प्रभावित होकर उन्हें सिद्धान्ती जी के पक्ष को ठीक माना।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह- सन १९३९ में आर्यसमाज ने नवाब हैदराबाद के विरुद्ध आर्य सत्याग्रह का बिगुल बजा दिया। श्री सिद्धान्ती जी ने पं. रघुवीर सिंह शास्त्री जी से कहा कि मैं तो जत्था लेकर हैदराबाद सत्याग्रह में जाऊँगा और तुम संस्था का काम सम्भालो। सिद्धान्ती जी का यह जत्था मेरठ, देहली होता हुआ शोलापुर सत्याग्रह कैम्प में पहुँचा। सत्याग्रह के संचालक स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने सिद्धान्ती जी से पूछा कि किस स्थान पर सत्याग्रह करना चाहते हो? श्री सिद्धान्ती जी ने उत्तर दिया कि जो मोर्चा सबसे कठिन हो वहीं हमें सत्याग्रह करने के लिए भेजा जाये। स्वामी जी ने उन्हें तुल्जापुर में सत्याग्रह करने का आदेश दिया। क्योंकि वहाँ पर पुलिस के साथ मुसलमान गुण्डे भी सत्याग्रहियों के साथ मारपीट करते थे। स्वामी जी ने आदेश दिया कि पुलिस से झगड़ा मत करना परन्तु डट कर मुकाबला करना। यह जत्था निजाम राज्य की सीमा पर पहुँच गया। वहाँ सत्याग्रहियों पर लाठियाँ पड़ी। १५ लाठियाँ सिद्धान्ती जी पर भी पड़ी। जत्था रात्रि को तुल्जापुर थाने में ले जाया गया। वहाँ नल दुर्ग जेल में भेज दिया गया। बाजार से भोजन स्वयं लाने की आज्ञा मिल गई। महाशय पृथ्वी सिंह बेधड़क बाजार से सामान ले आते थे और स्वयं भोजन बना लेते थे। आचार्य भगवानदेव जी के जत्थे के आने से पूर्व सिद्धान्ती जी के जत्थे को उस्मानाबाद भेज दिया गया। सिद्धान्ती जी वहाँ रोगी हो गये। एक दिन उस जेल में लाठीचार्ज हो गया। सत्याग्रहियों को पानी तक नहीं दिया गया। भाग्यवश जोरदार वर्षा हुई। सभी सत्याग्रहियों ने अपने डिब्बे मोड़कर सींखचों के बीच से उस दयालु का दिया पानी पीकर प्यास बुझाई। कुछ दिनों के पश्चात् सिद्धान्ती जी को यहाँ से सैन्ट्रल जेल हैदराबाद की लक्कड़ वार्ड में भेज दिया गया, जहाँ बहुत सख्ती की जाती थी। निजाम हैदराबाद को अन्ततः आर्यनेताओं के साथ समझौता करना पड़ा।

श्री सिद्धान्ती जी रिहा हाकर चांदा, वर्धा होते हुए दिल्ली पहुँचे। दूसरे जत्थों के सत्याग्राही दिल्ली पहुँच गये। इन साी सत्याग्रहियों को पं. रघुवीर सिंह शास्त्री बड़े सम्मान के साथ आर्य महाविद्यालय किरठल (मेरठ) ले आये।

रोग का आक्रमण- श्री सिद्धान्ती जी का शरीर यौवन काल में बहुत सुडौल और सुन्दर था। विषपान की घटना के पश्चात् विष का प्रभाव शरीर में बना रहा।

निजाम की जेल यातनाओं ने अग्नि में घी का काम किया। बवासीन ने अग्ररूप धारण कर लिया था। आपरेशन कराने पर अवस्था और बिगड़ गयी। अवस्था कुछ ठीक होने पर सिद्धान्ती जी को आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली लाया गया और वहाँ एक वर्ष रहकर अपनी प्रिय संस्था आर्य महाविद्यालय किरठल की सेवा में जुट गये।

१९४२ का स्वतन्त्रता आन्दोलन- अखिल भारतीय कांग्रेस ने सन् १९४२ में अंग्रेज सरकार के विरुद्ध "भारत छोड़ों आन्दोलन" चलाया। कुछ लोगों ने सिद्धान्ती जी को परामर्श दिया कि इस संस्था को बन्द कर दो और छात्र तथा आप लोग हमारे साथ डाकखाना फूंकने चलो। सिद्धान्ती जी को यह बात नैतिक नहीं लगी। उन्हीं व्यक्तियों ने ही सरकार को यह सूचना दी कि गुरुकुल के छात्र और अध्यापक भारी मात्रा में गोला-बारूद रखे हुए हैं। गुरुकुल कांगड़ी के विद्यार्थी भी इसी काम के लए आये हुए हैं। गुरुकुल में तलवारें, भाले, पिस्तौल काफी मात्रा में थे। वहाँ छपरौली थाने के हैडक्लर्क दर्शन लाल जी जो आर्यसमाजी थे, उन के परामर्श से सभी हथियार एक खेत में गहरा खड्डा खोद कर दबा दिया। छापा रद्द हो गया। श्री सिद्धान्ती जी ने अपनी दूरदर्शिता से आर्य महाविद्यालय को बचा लिया।

श्री सिद्धान्ती जी को चौ. छोटूराम ने लाहौर बुलाया और कहा कि आप और स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी दोनों आर्यसमाज के प्रचारक के रूप में हरियाणा का दौरा करो और वहाँ विश्वासपात्र लोगों को इस बात के लिए तैयार करें कि हमारी सेनायें अवसर आने पर स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए तैयार रहें। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार से गिरफ्तार कर लिये गये। श्री सिद्धान्ती जी पंजाब से बाहर रहने के कारण बचे रहे, परन्तु वारन्ट जारी थे और यह वारन्ट चौ. टीकाराम मलिक के मन्त्री बनने पर रद्द हुए।

आर्य महाविद्यालय किरठल का रजत जयन्ती समारोह- सन १९४४ में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। ३००००रु. एकत्र करने की योजना थी, परन्तु ४००००रु. एकत्र हुए और श्री सिद्धान्ती जी की दूरदर्शिता से धन संग्रह में मात्र तिरासी रुपये बारह आने खर्च हुए। उनकी ईमानदारी और मितव्यता पर सदैव सभी का गर्व रहा है। सन् १९४५ में श्री सिद्धान्ती जी इस संस्था को छोड़कर दिल्ली आ गये।

आर्य महाविद्यालय किरठल को छोड़ते समय श्री सिद्धान्ती जी व रघुवीरसिंह शास्त्री जी ने देहली में एक साप्ताहिक तथा प्रैस लगाने की योजना बनाई। और आप ने सम्राट नाक एक साप्ताहिक पत्र चालू कर दिया और १९४८ में सम्राट् प्रैस भी लगा दी।

आपने गुरुकुल झज्जर का उद्धार किया। आप १९५० में सर्वखाप पंचायत के प्रधान चुने गये और आजीवन प्रधान रहे। १९५६ में आर्यसमाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी आत्मानन्द महाराज की विशेष प्रेरणा पर आर्य नेता आचार्य भगवान् देव (स्वामी ओमानन्द सरस्वती) तथा पं. जगदेव सिद्धान्ती जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में सम्मिलित होने का निश्चय किया। जिस के आप पहले उपमन्त्री बने तथा स्वामी वेदानन्द सरस्वती के देहान्त के पश्चात् आप को बहुमत से मन्त्री चुना गया।

श्री सिद्धान्ती जी चार वर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री और एक वर्ष प्रधान भी रहे और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे।

पंजाब हिन्दी रक्षा आन्दोलन- पंजाब आर्यसमाज का गढ़ था, अत: हिन्दी भाषा के प्रचार को वहाँ आर्य लोगों ने बढ़ावा दिया। सिख नेताओं ने पंजाबी भाषा पर जोर दिया। पंजाब में हिन्दी भाषा को उचित स्थान दिलाने के लिए जून १९५६ में जालन्धर में आर्य नेताओं की एक बैठक हुई जिसमें हिन्दी रक्षा आन्दोलन चलाने का पवित्र संकल्प किया। श्री सिद्धान्ती जी को इस आन्दोलन का महामन्त्री बनाया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि

सभा दिल्ली ने इसका सफल संचालन किया और आन्दोलन बड़ी तीव्रता से चला। आन्दोलन को दबाने के लिए सत्याग्रहियों पर अत्याचार प्रारम्भ हो गये। फिरोजपुर जेल में रोहतक के सत्याग्रही श्री सुमेरसिंह का बलिदान हो गया। इस आन्दोलन में लगभग सत्तर-अस्सी हजार सत्याग्रही जेल जा चुके थे। जेलें खचाखच भरी थी। अन्ततः सभी आर्यनेताओं को श्री पन्त जी ने आश्वासन दिया और अपील के उत्तर आन्दोलन वापिस का विचार बन गया। श्री घनश्यामसिंह गुप्त तथा श्री सिद्धान्ती जी को हाथी पर बैठाकर गगनभेदी नारों से इनका स्वागत हुआ।

साहित्यिक रचनायें- श्री सिद्धान्ती जी का अधिक समय शिक्षण संस्थाओं के संचालन तथा लोकसेवा में व्यतीत हुआ। वे साहित्य रचना की ओर विशेष ध्यान न दे सके। उनकी कुछ रचनायें ये हैं - १. वैदिक धर्म परिचय २. छात्रोपयोगी विचारमाला ३. वैदिक वाङ्मय का संक्षिप्त परिचय ४. वैदिक विवाह पद्धति ५. मृत्यु के बाद जीव की गति ६. सत्यार्थप्रकाश पर महत्त्वपूर्ण टिप्पणियाँ। इसके अतिरिक्त श्री सिद्धान्ती जी ने 'सम्राट्' नामक साप्ताहिक पत्र का संचालन किया और पंजाब सभा के मुख पत्र 'आर्य मर्यादा' के प्रधान सम्पादक रहे।

हरयाणा लोक समिति- प्रो. शेरसिंह से कांग्रेस पार्टी को छोड़कर १९६२ में हरयाणा लोक समिति नामक एक राजनैतिक संगठन खड़ा किया। श्री सिद्धान्ती जी झज्जर लोकसभा क्षेत्र से इस समिति की टिकट पर खड़े हुए और कांग्रेसी प्रत्याशी प्रतापसिंह दौलता को भारी बहुमत से पराजित किया। दौलता जी ने इस चुनाव के विरुद्ध ट्रिब्यूनल कोर्ट में याचिका दायर की १२ फरवरी १९६४ को सुप्रीम कोर्ट का निर्णय सिद्धान्ती जी के पक्ष में हुआ। इसी दौड़भाग में एक भयंकर दुर्घटना हुई और आजीवन लंगड़ा कर ही चलते रहे। इन उलझनों के कारण सिद्धान्ती जी केवल तीन वर्ष ही सदन में बैठ गये। श्री सिद्धान्ती जी की सादगी और विद्वत्ता की लोकसभा में विशेष छाप भी।

हरयाणा प्रान्त का उदय- भारत के विभाजन के पश्चात् संयुक्त पंजाब में हरयाणा प्रान्त सर्वथा उपेक्षित रहा। श्री सिद्धान्ती जी की सुनियोजित विधि से हरयाणा के निर्माण के लिए प्रयत्न सार्थक रहे। श्री सिद्धान्ती जी का हरियाणा प्रान्त के पुनः आविर्भाव में जो योगदान रहा है, वह हरयाणा प्रान्त के इतिहास में सदा स्मरणीय रहेगा।

नागरिक अभिनन्दन - पं. जगदेव सिंह सिद्धान्ती शास्त्री की वैदिक धर्म के सिद्धान्तों के प्रति अगाध श्रद्धा, वेद आदि शास्त्रों में योग्यता, निष्काम-समाजसेवा आदि महान् गुणों के कारण सन् १९७५ में आर्य विद्वत्त परिषद दिल्ली के तत्वावधान में एक सिद्धान्ती अभिवादन समारोह समिति का गठन पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी की अध्यक्षता में हुई। इस समिति ने एक विशाल अभिनन्दन ग्रन्थ तैयार किया और सन् १९७७ में उनका नागरिक अभिनन्दन किया गया।

आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् पं. जगदेव सिंह सिद्धान्ती जी २७ अगस्त १९७९ को इस शरीर को त्यागकर परलोक सिधार गये। उनकी अन्त्येष्टि वैदिक रीति से की गई। इनके निधन से समाज से एक निष्ठावान् कर्मयोगी का अभाव हो गया जिसकी पूर्ति असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। इनको सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके बताये हुए मार्ग पर चल कर अपने जीवन को सार्थक कर सकें।

सहयोगी ग्रन्थ-

१. पं. जगदेवसिंह सिद्धान्ती जीवन परिचय
डॉ. सुदर्शन देव आचार्य
प्रकाशक- आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक

२. जगदेव सिंह सिद्धान्ती अभिनन्दन ग्रन्थ
प्रकाशक-आर्य विद्वत्त परिषद दिल्ली

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी और आधुनिक कम्प्यूटर विज्ञान

– डॉ. महावीर मीमांसक

अपने पिछले लेखों में हमने प्रदर्शित किया था कि पाणिनि की अष्टाध्यायी के आधार पर नामिक और आख्यातिक नामिक पुस्तकों में सुबन्त और तिङन्त शब्दों की व्युत्पत्ति एक–दूसरे की अपेक्षा के आधार पर चलती है, वह निरपेक्ष पद्धति नहीं है अपितु द्विमार्गीय पद्धति है जो एक तरफ अनभिहित के मार्ग पर और दूसरी ओर अभिहित के मार्ग पर चलती है जिस का आधार एक ओर पाणिनि की अष्टाध्यायी का सूत्र ''अनभिहिते'' (२.३.१) प्रवृत्त होता है और दूसरी ओर अभिहित का मार्ग स्वत: ही प्रवृत्त हो जाता है। यह पूरी व्युत्पत्ति की प्रक्रिया अष्टाध्यायी के परिभाषा सूत्र ''समर्थ: पदविधि'' (२.१.१) के निर्देशन में चलती है। पाणिनि की उत्तरवर्ती नव्य परम्परा में यह मौलिक व्युत्पत्ति पद्धति की प्रक्रिया की परम्परा पूर्णत: लुप्त हो गई और भट्टोजी दीक्षित की सिद्धान्त कौमुदी की नव्य परम्परा चल पड़ी, यद्यपि इस नव्य परम्परा में रामचन्द्र की प्रक्रिया कौमुदी आदि अन्य ग्रन्थों का भी पूरा योगदान रहा। यहाँ हमारा आधार पाणिनि की अष्टाध्यायी की मौलिक प्राचीन परम्परा ही है जिसके आधार पर हम पूरी व्युत्पत्ति प्रक्रिया का प्रदर्शन अपने पिछले लेखों में कर चुके हैं। इस सम्बन्ध में हमरे लेखों का आधार पाणिनि की अष्टाध्यायी और पतञ्जलि का महाभाष्य ही मुख्य रूप से हैं, यद्यपि नव्य परम्परा के भी अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं। आधुनिक विज्ञान, विशेषत: भाषा विज्ञान के आधार पर विदेशों में पाणिनि की अष्टाध्यायी पर जो खोज हुई है वह तो हमारी चर्चा का यहां विषय है ही।

कम्प्यूटर (संगणक) का आविष्कार गत शताब्दी की यान्त्रिक विज्ञान की एक अत्यन्त अद्भुत और महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी। कम्प्यूटर विज्ञान की यान्त्रिक तकनीक पाणिनि के व्युत्पत्ति विज्ञान की तकनीक से पूरी तरह मेल खाता है, ऐसा लगता है कि पाणिनि की अष्टाध्यायी में प्रयुक्त व्युत्पत्ति विज्ञान की तकनीक का ही दूसरा नाम कम्प्यूटर है।

पाठकों, विद्वानों, वैध्याकरणें का इस लेख से पहले के हमारे दो लेख विशेष रूप से समरण होंगे जो नामिक और आख्यातिकों को लेकर लिखे गये थे उनमें सुबन्तों और तिङन्तों की व्युत्पत्ति प्रक्रिया के विषय में लिखा था। अनभिहित कर्म की विवक्षा में प्रातिपदिक से द्वितीया विभक्ति के विधान से अष्टाध्यायी २.३.२ के अनुसार अष्टाध्यायी ४.१.१ और ४.४.२ सूत्रों से अम् और शास् प्रत्यय द्वितीया विभक्ति में करने के बाद बेदम शब्द की व्युत्पत्ति रूपान्तर होकर गई। अष्टाध्यायी २.३.४६ से।

इसी प्रकार राम प्रातिपदिक की व्युत्पत्ति अभिहितकर्त्ता होने के कारण प्रथमा विभक्ति एकवचन की प्राप्ति होने से रूपान्तर होकर राम: की व्युत्पत्ति हुई और पठ धातु से अभिहित कर्त्ता में विकल प्रत्यय शप (अष्टाध्यायी ३.१.६८) से प्राप्त होने पर रूपानतर होकर अष्टाध्यायी ३.४.६९ से ही कर पठति के रूप में व्युत्पत्ति होकर ''राम: वेदं पठति'' यह वाक्य व्युत्पन्न हुआ।

इसी प्राकर यदि कर्त्ता राम की विवक्षा अनभिहित के रूप में वक्ता की हो तो अष्टाध्यायी २.३.१८ से तृतीया विभक्ति का एकवचन प्राप्त होने से राम प्रातिपदिक का रूपान्तर रमिण के रूप में हो जायेगा और पठ् क्रिया से विकरण प्रत्यय अष्टाध्यायी ३.१.६७ से विकरण प्रत्यय यक् प्राप्त होकर पठयते के रूप में रूपान्तर हो जायेगा। इस सम्पूर्ण व्युत्पत्ति प्रक्रिया में कारकों का योगदान अतीव अनिवार्य एक महत्त्वपूर्ण अंग है। इस समूची व्युत्पत्ति की प्रक्रिया में दो तथ्य ही प्रत्यक्ष दिखाई दे रहे हैं, एक तो प्रातिपदिक और धातु तथा प्रत्यय आधारभूत अन्तर्निहित मौलिक तत्त्व और दूसरे उन अन्तर्निहित मूलभूत धातु, प्रातिपदिक तथा प्रत्ययों के तदनुसार लगाने पर व्युत्पन्न शब्द। अत: यहां एक तो मूलभूत तत्त्व दृष्टिगोचर हैं और

दूसरे उन से व्युत्पन्न होकर रूपान्तरित व्यवहारिक रूप में बोले जाने वाले शब्द। इस प्रकार यह सम्पूर्ण वाक्य बनता है रामः वेदं पठति, का रामेण वेदः पठ्यते। इसमें स्वर प्रक्रिया लागू नहीं की है। इस सम्पूर्ण रूपान्तरण की प्रक्रिया में एक स्तर अन्तस्तम संरचना का है जो रूपानतरण से पहले मूल रूप में रहता है और दूसरा रूपान्तरण की प्रक्रिया के बाद जो प्रायोगिक बोला जाने वाला वाक्य के रूप में रूपान्तरित होता है। व्युत्पत्ति शब्द का यही अर्थ है एक रूप को दूसरे रूप में बदलना एक रूप शब्दों का Aeep structure में है और वही रूप बदल कर surface structure में बन जाता है। इसी को व्युत्पत्ति कहते हैं। यही दोनों अवधारणा कम्प्यूटर विज्ञान और आधुनिक भाषा विज्ञान में काम करती है। इनमें से पहली अवधारणा अन्त स्तम्भ संरचना कहलाती है और दूसरी अवधारणा सतही या प्रायोगिक संरचना कहलाती है। इन दोनों प्रकार की अवधारणाओं के आधुनिक जनक नोम चोमस्की हैं जो रूपान्तर व्याकरण के प्रामाणिक आचार्य माने जाते हैं, जबकि महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी में तो ये अवधारणायें पहले से मौजूद है, पाणिनि की अष्टाध्यायी तो चलती ही इन्हीं अवधारणाओं पर है। यह भी उल्लेखनीय है कि अन्तस्तम्भ संरचना और सतही संरचना की अवधरणाओं जो आधुनिक भाषा विज्ञान में उपयोग की जाने वाली अवधारणायें हैं, जो विशेष रूप से वाक्य संरचना के अध्ययन में परिवर्तनकारी व्याकरण में नोम चोमस्की की अवधारणायें है और कम्प्यूटर विज्ञान में रूपान्तर करने वाली व्युत्पत्ति काक तकनीय में त्सुगुत्सा एल की देन है, वहाँ अष्टाध्यायी ये दोनों तकनीक अकेले पाणिनि आचार्य की देन है। वस्तुतः त्सुगुत्सा एल ही रूपान्तरण तकनीक के जनक माने जाते हैं। यह है आधुनिक कम्प्यूटर विज्ञान।

वस्तुतः हम अपने प्राचीन भारतीय ऋषियों की बौद्धिक और वैज्ञानिक धरोहर से पूर्णतः अनभिज्ञ हैं जबतकि आधुनिक पश्चिमी वैज्ञानिक हमारी उन्हीं धरोहरों को अपने आविष्कार का ठप्पा लगाकर प्रसिद्धि को प्राप्त कर रहे हैं। लेखक ने इसी विषय पर सन् १९८४ में Samartha Theory of panins and sentence neravation शीर्षक से पुस्तक लिखी थी जो मुंशीराम मनोहर लाल, दिल्ली से प्रकाशित हुई थी। पुस्तक अंग्रेजी भाषा में होने के कारण संस्कृत-हिन्दी वालों तक नहीं पहुँच पाई। फिलिडेल्फिया (अमेरिका) विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जार्ज कारडोना ने अपनी पुस्तक Morden research on panini में इसी की बहुत चर्चा की थी। विदेशों में यह पुस्तक पर्याप्त चर्चा में आई। किन्तु खेद चाहते हुये भी यह पुस्तक हिन्दी भाषा में नहीं आ पाई। डॉ. सत्यव्रत शास्त्री जी ने सन् १९८५ नवम्बर में अहमदाबाद में अखिल भारतीय प्राच्य विद्या, महासम्मेलन के अवसर पर अपने अध्यक्षीय भाषण में हमारी उपर्युक्त पुस्तक की प्रशंसा की थी, जो महासम्मेलन की कार्यवाही में प्रकाशित हुई।

पाणिनि की अष्टाध्यायी ओर उस पर पतञ्जलि मुनि का महाभाष्य दोनों ग्रन्थ विश्वभर में भाषा विज्ञान और कम्प्यूटर विज्ञान के क्षेत्र में अति प्रसिद्ध मान्यता प्राप्त ग्रन्थ हैं। लगभग २०० वर्ष पहले जेम्स वॉट ने भाषा विज्ञ्क्र नाम का विषय प्रवृत्त किया जो विदेशी विश्वविद्यालयों में बड़ा लोकप्रिय बना, भारतीय विश्वविद्यालयों में भी बाद में आया। इस विषय के प्रवर्तक और संस्थापक जेम्स वॉट ने कहा थ कि यह विषय मैंने पाणिनि की अष्टाध्यायी से प्रेरणा लेकर चालू किया और मैं अभी तक भी भाषा विज्ञान के उन सभी सिद्धान्तों को नहीं जान पाया हूँ जो पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी में ज्ञापित किये हैं। विश्व व्यापक इतनी ख्याति होने के कारण ही पाणिनि महर्षि के प्रति अपने उद्‌गार प्रकट करते हुये ही महाविद्वान् ब्लूम फील्ड ने अपनी पुस्तक लैंगवेज में लिखा अर्थात् पाणिनि मानव मस्तिष्क का विश्वस्तरीय दृढ़ स्तम्भ (जिसके बराबर अभी तक और किसी का मस्तिष्क नहीं हुआ)।

ऐसे पाणिनि की विरासत और वरदान सम्भालने का हमें सौभाग्य मिला है, हम इसके कितने पात्र और अधिकारी साबित होते हैं?

पितर और उनका श्राद्ध

आचार्य रामनिवास 'गुणग्राहक'

आर्यसमाज से भिन्न आर्यावर्त्त देशोत्पन्न आर्यजन, भूलवश जो स्वयं को हिन्दू कहते हैं, उनमें गीता के द्वारा दिये गये श्रीकृष्ण के उपदेशों के प्रति अगाध श्रद्धा है। श्रीकृष्ण कहते हैं-

कर्म ब्रह्मोद्‌भवं विद्धि ब्रह्माक्षर समुद भवम्।
तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म, नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्।। (३.१५)

अर्थात् सब कर्म ब्रह्म = वेद से उद्‌भूत हैं और वेद अक्षर = अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न हैं। इसलिए सब वैध्दक कर्मों में सर्वोपयोगी होने से वेद नित्य यज्ञ में प्रतिष्ठित माना जाता है। वेद के सम्बन्ध में महाभारत में कहा है- ''सर्वं विदुः वेदविदो, वेदे सर्वं प्रतिष्ठितम्'' (महा. शान्ति २७०.४३) अर्थात् वेद विद्या के जानने वाले सब कुछ जानते हैं, क्योंकि सब विद्याएँ वेद में ही प्रतिष्ठित है। आचार्य शंकर का उद्‌घोष सुनिये- ''नहि उपेक्षितव्यं इति श्रुतिः अनुकम्पा आह मातृवत्'' (कठो. १.३.१४) अर्थात् वेद मन्त्र माता की भाँति कृपा व स्नेह पूर्वक हित की सुख-लाभ की बात कहते हैं, उनकी उपेक्षा मत करो। महर्षि यास्क कर्म और वेद का सम्बन्ध बताते हुए कहते हैं- ''पुरुष विद्या अनित्यत्वात् कर्म सम्पत्तिर्मन्त्रो वेदे'' (नि. १.२.२) अर्थात् पुरुष (मानुषी) विद्या अनित्य होने से उसमें भूलचूक बनी ही रहती है, इसलिए पूर्ण पुरुष परमात्मा ने हमारे कर्त्तव्य कर्मों के ज्ञान के लिए वेदमन्त्रों के माध्यम से आज्ञा दी है। पितरों के सम्बन्ध में वेद का आदेश भी देखिये-

ओं ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्।
स्वधा स्थ तर्पयत् मे पितृन्।। (यजु. २.३.४)

इसका अर्थ करते हुए ऋषि लिखते हैं- ईश्वर सबको आज्ञा देता है कि पिता व स्वामी अपने पुत्र, पौत्र, स्त्री व नौकरों को सब दिन के लिए आज्ञा दे के कहे- जो मेरे पिता-पितामह आदि माता-मातामहादि तथा आचार्य और इससे भिन्न भी विद्वान् लोग, अवस्था अथवा ज्ञान में वृद्ध, मान्य करने योग्य हों, उन सब के आत्माओं को यथा योग्य सेवा से प्रसन्न किया करो। हे पितृ लोगों! तुम सब हमारे अमृत रूप पदार्थों के भोगों से सदा सुखी रहो। जिस-जिस पदार्थ की तुम को अपने लिए इच्छा हो, जो-जो हम लोग कर सकें, उस-उसकी आज्ञा सदा करते रहो। हम लोग मन, वचन, कर्म से तुम्हारे सुख करने में स्थित हैं। जैसे तुम लोगों ने बाल्यावस्था और ब्रह्मचर्याश्रम में हम लोगों को सुख दिया है, वैसे हम को भी आप लोगों का प्रत्युपकार करना चाहिए, जिससे हम लोगों को कृतघ्नता का दोष न प्राप्त हो।

पितर कौन- संस्कृत भाषा का थोड़ा सा ज्ञान रखने वाले जानते हैं कि संस्कृत में बहुधा माता-पिता के स्थान पर मातृ-पितृ शब्दों का पुष्कल प्रयोग होता है। सामान्य बोलचाल में भी 'मातृ भक्त' 'पितृ भक्त' का खूब प्रयोग किया जाता है। भाई को भी भ्राता या भ्रातृ कहते-सुनते हैं। तनिक और आगे बढ़ें तो मातृ को मातरः पित् को पितरः और भ्रातृ को भ्रातरः का उपयोग भी समझा जा सकता है। मध्यकाल के हमारे पेटू पण्डितों, अधकचरे आचार्यों और स्वार्थी शास्त्रियों ने प्राचनी वैदिक ग्रन्थों में स्वार्थ-साधक मिलावटें कीं तो पितर का अर्थ मरे हुए माता-पिता, दादी-दादा कर दिया। भारतीय जनमानस काएक बहुत अच्छा गुण है-परम्परावादी होना। हमारे वयोवृद्ध व ज्ञानवृद्ध जन हमसे जो कुछ कहते, हम उसे सिर झुका कर स्वीकार कर लेते। जब समाज परम्परावादी प्रवृत्ति का हो तो ज्ञानवृद्ध बुद्धिजीवियों, पण्डितों का उत्तरदायित्व बढ़ जाता है कि वे समाज को वेदों के अनुसार, सत्य धर्म के अनुसार प्रेरित करें। महाभारत युद्ध के बाद चक्रवर्ती साम्राज्य सत्ता के विघटन के बाद निरंकुश होकर आलसी-प्रमादी और स्वार्थी हो गये।

इतने स्वार्थी कि घर-परिवार के वृद्ध माता-पिता, दादी-दादा आदि की सेवा छुड़ाकर अपनी सेवा में लगा दिया वर्षों से एक कहावत भारतीय जनमानस में कटी पतंग की तरह विचरण कररही है-

'जियत पिता ते दंगमदंगा। मरे पिता पहुँचाये गंगा।
जियत पिता की न पूछी बात मरे पिता को खीर व भात।।'

संस्कृत भाषा के अनुसार पिता और पितर शब्द- 'पा रक्षणे पोषणे च' धातु से बनते हैं, जिनका अर्थ होता है- पालन व रक्षा करने वाले। जो लोग पण्डित नामधारी लोगों अन्धभक्त न होकर अपनी बुद्धि से काम लेना जानते हैं, उनके लिए वेद का प्रमाण देकर बात दें कि पितर किसे कहते हैं- "पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति" (यजु. २५.२२) अर्थात् जीवन में एक ऐसी अवस्था आती है जब पुत्र पितर बन जाते हैं। यह एक व्यावहारिक सच है कि बुढ़ापे में माता-पिता शरीर से अशक्त और असमर्थ हो जाते हैं, तब पुत्र ही उनका पालन और रक्षण करने के कारण पितर बन जाते हैं। स्पष्ट है कि हमारी संस्कृति और धर्मदर्शन से लेकर ज्ञान-विज्ञान के मूल स्रोत वेद पालन करने वाले को ही पितर कहते हैं। जिन्होंने हमारा पालन किया है, उन जीवित पितरों- माता-पिता, दादी-दादा आदि घर के बड़ों की सच्चे मन से सेवा करना ही सच्चा श्राद्ध है और भोजन-वस्त्र व मधुर वाणी से उनको सन्तुष्ट रखना, तृप्त करना ही तर्पण है।

श्राद्ध- श्राद्ध शब्द का अर्थ भी समझ लें तो हमें सच्चे श्राद्ध और पण्डितों द्वारा पेटपूर्ति के लिए प्रचलित झूठे श्राद्ध का अन्तर स्पष्ट दिखने लगेगा। 'श्रत् सत्यं दधाति यया क्रियया सा श्रद्धा, श्रद्धया यत् क्रियते तत् श्राद्धम्'- अर्थात् जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण किया जाए, वह श्रद्धा कहाती है और श्रद्धापूर्वक किये कर्म को श्राद्ध कहते हैं। सरल शब्दों में कहें तो सत्य को स्वीकार करने वाला मनुष्य का स्वाभाविक गुण श्रद्धा कहा जाता है। सत्य को स्वीकार करने से पहले यह अति आवश्यक है कि अपने बुद्धि विवेक से तर्क-वितर्क और प्रश्नोत्तर करके सत्य-असत्य का निर्णय कर लिया जाय। कहीं ऐसा न हो कि कुछ स्वार्थी लोग हमारी अज्ञानता का लाभ उठाकर असत्य को सत्य के आवरण में लपेट कर अपनी स्वार्थपूर्ति तो नहीं कर रहे? धर्म और ईश्वर के नाम पर भारत ही नहीं विश्वभर में आज यही हो रहा है, इसलिए प्रत्येक समझदार मनुष्य को चाहिए कि धर्म और ईश्वर के विषय में बुद्धि-विवेक से प्रश्नोत्तर करके सत्य को जानने-समझने का प्रयास अवश्य करे। कुछ लोग कहेंगे कि हमने तो वेदशास्त्र पढ़े नहीं, हमें क्या पता सच क्या है और झूठ क्या है? भोले भाई! परमात्मा ने मनुष्य का स्वभाव सत्यशील ही बनाया है। हम थोड़ी-सी बुद्धि से काम लें तो सच-झूठ में भेद कर सकते हैं। वेद में कहा है- 'अश्रद्धां अनृते दधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः'- अर्थात् प्रजापति परमात्मा ने हमारे हृदय में सत्य के प्रति श्रद्धा और असत्य के प्रति अश्रद्धा स्वाभाविक रूप से दे रखी है। जो भाग्यशाली मनुष्य अपने इस गुण का थोड़ा-सा भी प्रयोग करते हैं उनके लिए सत्य का जानना कभी कठिन नहीं रहा। कठिनाई यह है कि सत्य को जानने-समझने से अधिक कठिन है, सत्य को स्वीकार करना, सत्य को व्यवहार का अंग बनाना। हम अपनी छोटी-सी बुद्धि से यह निर्णय किये ही रहते हैं कि सत्य को स्वीकार करना घाटे का सौदा है। आश्चर्य तो इस बात का है कि वही हमारी छोटी-सी बुद्धि सार्वजनिक रूप से झूठ के सुख-लाभ बताने के लिए कभी तैयार नहीं होती। हमें इस छोटी सोच से ऊपर उठना होगा, सत्य को स्वीकार करने वाली श्रद्धा को बलवान बनाना होगा। उसी श्रद्धा के साथ पितरों की सवा करना वेद-शास्त्रों की दृष्टि में सच्चा श्राद्ध है। यह तोएक व्यवहार सिद्ध सत्य है कि जीवित माता-पिता की सेवा करने से उन्हें सुख मिलता है, वे प्रसन्न होते हैं और प्रसन्न चित्त से दिये गए उनके आशीर्वाद ही हमारा कल्याण करते हैं। झूठे श्राद्ध के नाम पर उनके मरने के बाद पेटू पण्डितों को बुलाकर भोजन कराने का लाभ

हमारे मृत-पितरों को मिलगा, यह तो उन पण्डितों द्वारा प्रचलित पाखण्ड है, जिसका कोई सैद्धान्तिक आधार नहीं।

स्वयं से पूछो- भारतीय जनमानस परम्परावादी प्रवृत्ति वाला है। यह एक गुण भी है और दोष भी। माता-पिता आदि बड़ों और गुरू-आचार्य आदि विद्वानों की शिक्षा उपदेश को सहज भाव से स्वीकारना जहाँ एक सद्गुण है, वहीं इनकी बातों पर तनिक विचार न करना अवगुण की कोटि में आता है। हम श्राद्ध के नाम पर अपने जन्मदाता-पालनहार की सेवा न करके पेटू पण्डितों को बिना विचारे खिला देते हैं, यह अच्छा गुण नहीं कहा जा सकता। जो हमारे माता-पिता आदि बड़ों की सेवा से छुड़ाकर अपनी सेवा-पूजा में लगा लें तो उन्हें सज्जन कैसे कहा जा सकता है? सोचो तो सही, कल हमें भी बुढ़ापा आयेगा। तब हमारे पाले-पोषे गये पुत्र हमारी सेवा करें, हम भूखे-प्यासे, अपमान-उपेक्षा भोगते हुए मर जाएँ और बाद में हमरे पुत्र-पौत्र पण्डितों-पड़ोसियों व गाँव-मौहल्ले वालों को भरपेट भोजन खिलायें तो क्या हमें अच्छा लगेगा? कोई भी मनुष्य इसके लिए तैयार नहीं होगा। अगर हम स्वयं के लिए ऐसा नहीं चाहते तो अपने पुत्र-पौत्रों को यह क्यों सिखा रहे हो? नहीं-नहीं! हम तो ऐसा नहीं सिखा रहे। अरे भाई! तुम्हीं तो उन्हें केवल कहकर नहीं, ऐसा करके उन्हें व्यावहारिक शिक्षा दे रहे हो। आप ऐसा कर रहे हो और आपके पुत्र-पौत्र आदि परिवार वाले यह सब देख रहे हैं, आपके साथ कर रहे हैं तो आपके वृद्ध होने पर वो यही तो करेंगे। उन्हें ऐसा करना कौन सिखा रहा है? क्यों अपने हाथों अपना, अपने माता-पिता का और अपने पुत्र-पौत्रों का बुढ़ापा नर्क बना रहे हो? डरो मत! यह कोई पुण्य कर्म या शास्त्रीय व्यवस्था नहीं है कि माता-पिता की सेवा न करो, पण्डितों को भोजन कराओ। यह धर्म नहीं अधर्म है, यह पुण्य नहीं पाप है। यजुर्वेद में कहा है- ''हे पुत्र, शिष्य और पुत्रवधु आदि लोगो! तुम उत्तम अन्नादि पदार्थों से माता-पिता आदि वृद्धों की निरन्तर सेवा किया करो। जैसे बाल्यावस्था में माता-पिता आदि तुम्हारी सेवा करते हैं, वैसे ही तुम वृद्धावस्था में उनकी सेवा यथावत् किया करो। (१९.३६)'' आगे लिखा है- ''सन्तानों को योग्य है कि पिता आदि की सेवा और अनुकूल आचरण से पिता आदि सभी बड़ों को प्रसन्न व सन्तुष्ट रखें। (१९.३७)'' अथर्ववेद में विवाह के समय पुत्री का पिता कहता है- 'ऐषा ते कुलपा राजन् तामु ते परिदद्मसि। ज्योक् पितृष्वा साता आ शीर्ष्ण समोप्यात् (१.१४.३)।'

अर्थात् हे वर महोदय! यह जो पुत्री मैं आपको सौंप रहा हूँ, यह कुलपा है, तेरे कुल का पालन करने वाली है। यह चिरकाल तक तेरे माता-पिता के साथ रहेगी और आने वाली सन्तति में ऐसा ही मर्यादा के बीज डालेगी। माता-पिता की सेवा के सम्बन्ध में तो कहने को बहुत कुछ है। सुधी पाठक विचार करें। ऐसी बात नहीं है कि माता-पिता की सेवा एकदम छुट गई हो। हमारे आसपास ऐसे बहुत घर-परिवार मिल जाएँगे, जो सच्चे मन से माता-पिता की सेवा करते हैं। ऐसी पुत्रवधु भी कम नहीं है जो अपने सास-श्वसुर की सेवा कर रही है। उनके लिए वही सच्चा श्राद्ध है। कुछ लोग कहते हैँ कि माता-पिता की सेवा भी करें और उनकी मृत्यु के बाद पण्डितों व गाँव वालों को भोजन भी करा दें तो कोई हानि है क्या? यह हम सब जानते हैं कि मृत शरीर के दाहकर्म को अन्तिम संस्कार कहते हैं। इसके बाद मृत स्त्री-पुरुष के साथ हमारा कोई कर्त्तव्य शेष नहीं रहता। उसके नाम पर विद्या वृद्धि के लिए यथायोग्य दान देना उत्तम है, मगर आजकल के पण्डित नामधारियों को कुछ भी देना, भोजन कराना कोई पुण्य कारक नहीं। ब्राह्मण वो है जो वेद पढ़े-वेद पढ़ाये, यज्ञ घर पर करे, दूसरों के घर कराये, दान दे व दान ले। इन गुणों वालों का सेवा-सम्मान अच्छी बात है। लेकिन किसी के स्वर्गवास के बाद तो प्रचलित परम्परा के अनुसार भोजन कराना नितान्त अनावश्यक है।

जीव

स्वामी स्वतन्त्रानन्द महाराज

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज आर्यसमाज के अग्रणी नेता रहे हैं। आपने सन् १९२५ से १९३५ तक श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय, लाहौर के आचाचर्य पद को सुशोभित किया था। महाराज श्री वैदिक सिद्धान्तों के साथ सिख सिद्धान्तों के भी प्रामाणिक विद्वान् थे। प्रस्तुत लेख आपकी महत्त्वपूर्ण रचना- आर्य सिद्धान्त और सिख गुरू से उद्धृत है- सम्पादक

जीव शरीरधारी माना जाता है। शरीर भोगायतन अर्थात् भोग भोगने का स्थान है। शरीर जड़ है और जीव चेतन है। शरीर सादि सान्त हैं और जीव अनादि अनन्त है। शरीर में रह कर जीव जैसे भोग भोगता है वैसे कर्म भी करता है। यह संसार जीव के कर्म करने और उनका फल भोगने का क्षेत्र है। शरीर के नाश समय अर्थात् मृत्यु समय जीव शरीर से पृथक् होकर अपने कर्मानुसार दूसरे शरीर को प्राप्त करता है इसी का नाम पुनर्जन्म है। पुनर्जन्म पर पृथक् लिखा जायेगा।

सत्यार्थप्रकाश के तीसरे और सातवें समुल्लास में जीव विषयक लिखा है। सत्यार्थप्रकाश का पाठ आगे लिखता हूं-

''इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनो लिङ्गानि।''

न्याय.। अ. 1। आ. 1। सूत्र १०।

जिसमें (इच्छा) राग (द्वेष) वैर (प्रयत्न) पुरुषार्थ, सुख, दुःख (ज्ञान) जानना गुण हों, वह जीवात्मा कहाता है। वैशेषिक में इतना विशेष है-

प्राणापाननिमेषोन्मेषजीवनमनोगतीन्द्रियान्तर्विकारसुख-दुखेच्छाद्वेषप्रयत्नाश्चात्मनो लिङ्गानि।

वै. अ. ३। आ. २। सूत्र ४

(प्राण) भीतर से वायु का निकलना (अपान) बाहर से वायु को भीतर लेना (निमेष) आंख को नीचे ढांकना (उन्मेष) आंख को ऊपर उठाना (जीवन) प्राण का धारण करना (मनः) मनन विचार अर्थात् ज्ञान (गति) यथेष्ट गमन करना (इन्द्रिय) इन्द्रियों को विषयों में चलाना, उनसे विषयों का ग्रहण करना (अन्तर्विकार) क्षुधा, तृषा, ज्वर, पीड़ा आदि विकारों का होना, सुख-दुःख, इच्छा, द्वेष और प्रयत्न ये सब आत्मा के लिंग अर्थात् कर्म और गुण हैं। - सत्यार्थप्रकाश समुल्लास-३

प्रश्न- जीव स्वतन्त्र है या परतन्त्र।

'उत्तर- अपने कर्त्तव्य कर्मों में स्वतन्त्र और ईश्वर की व्यवस्था में परतन्त्र है।'स्वतन्त्रः कर्त्ता' यह पाणिनीय व्याकरण का सूत्र है जो स्वतन्त्र अर्थात् स्वाधीन है वही कर्त्ता है।

प्रश्न- स्वतन्त्र किसको कहते हैं?

उत्तर- जिसके आधीन शरीर, प्राण, इन्द्रिय और अन्तःकरणादि हो। जो स्वतन्त्र न हो तो उसको पाप-पुण्य का फल प्राप्त कभी नहीं हो सकता, क्योंकि जैसे भृत्य, स्वामी और सेना सेनाध्यक्ष की आज्ञा अथवा प्रेरणा से युद्ध में अनेक पुरुषों को मार के अपराधी नहीं होते वैसे परमेश्वर की प्रेरणा और आधीनता से काम सिद्ध हो, तो जीव को पाप वा पुण्य न लगे। उस फल का भागी प्रेरक परमेश्वर होवे। नरक स्वर्ग अर्थात् दुःख-सुख की प्राप्ति भी ईश्वर को होवे। जैसे किसी मनुष्य ने शस्त्र विशेष से किसी को मार डाला, सो वही मारने वाला पकड़ा जाता है और वही दण्ड पाता है, शस्त्र नहीं। वैसे ही पराधीन जीव पाप-पुण्य का भागी नहीं हो सकता। इसलिए अपने सामर्थ्यानुकूल कर्म करने में जीव स्वतन्त्र, परन्तु जब वह पाप कर चुकता है, तब ईश्वर की व्यवस्था में पराधीन होकर पाप के फल भोगता है। इसलिए कर्म करने में जीव स्वतन्त्र और पाप के दुःख रूप फल भोगने में परतन्त्र होता है।

प्रश्न- जो परमेश्वर जीव को न बनाता और सामर्थ्य न देता, तो जीव कुछ भी नहीं कर सकता, इसलिए

परमेश्वर की प्रेरणा ही से जीव कर्म करता है।

उत्तर– जीव उत्पन्न कभी न हुआ, अनादि है। जैसा ईश्वर और जगत् का उपादान कारण नित्य है और जीव का शरीर तथा इन्द्रियों के गोलक परमेश्वर के बनाये हुए हैं, परन्तु वे सब जीव के आधीन हैं। जो कोई मन, वचन, कर्म से पाप-पुण्य करता है, वह भोगता है, ईश्वर नहीं। जैसे किसी कारीगर ने पहाड़ से लोहा निकाला, उस लोहे को किसी व्यापारी ने लिया, उसकी दुकान से लोहार ने ले तलवार बनाई, उससे किसी सिपाही ने तलवार ले ली, फिर उससे किसी को मार डाला। अब यहां जैसे वह लोहे को उत्पन्न करने, उससे लेने, तलवार बनाने वाले और तलवार को पकड़ कर राजा दण्ड नहीं देता, किन्तु जिसने तलवार से मारा, वही दण्ड पाता है। इसी प्रकार शरीर आदि की उत्पत्ति करने वाला परमेश्वर उसके कर्मों का भोक्ता नहीं होता, किन्तु जीव को भुगाने वाला होता। जो परमेश्वर कर्म करता तो कोई जीव पाप नहीं करता, क्योंकि परमेश्वर पवित्र और धार्मिक होने से किसी जीव को पाप करने में प्रेरणा नहीं करता। इसलिए जीव अपने काम करने में स्वतन्त्र है। जैसे जीव अपने कामों के करने में स्वतन्त्र है, वैसे ही परमेश्वर भी अपने कामों के करने में स्वतन्त्र है।

प्रश्न– जीव और ईश्वर का स्वरूप, गुण, कर्म और स्वभाव कैसा है?

उत्तर– दोनों चेतन स्वरूप हैं। स्वभाव दोनों का पवित्र, अविनाशी और धार्मिकता आदि है। परन्तु परमेश्वर के सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय सब को नियम में रखना, जीवों को पाप, पुण्यों के फल देना आदि धर्मयुक्त कर्म हैं और जीवों के सन्तानोत्पत्ति, उनका पालन, शिल्प विद्यादि अच्छे बुरे कर्म हैं। ईश्वर के नित्य ज्ञान, आनन्द, अनन्त बल आदि गुण हैं और जीव के-

इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनो लिङ्गमिति।

न्याय०१। १। १०

प्राणापाननिमेषोन्मेषमनोगतीन्द्रियान्तर्विकाराः सुखदुखेच्छाद्वेषप्रयत्नाश्चात्मनो लिङ्गानि।

वैशेषिक ३। २। ४

(इच्छा) पदार्थों की प्राप्ति की अभिलाषा (द्वेष) दुःखादि की अनिच्छा वैर (प्रयत्न) पुरुषार्थ बल (सुख) आनन्द (दुःख) विलाप अप्रसन्नता (ज्ञान) विवेक, पहचान ये तुल्य हैं, परन्तु वैशेषिक में (प्राण) प्राण वायु को बाहर निकालना (अपान) प्राण को बाहर से भीतर लेना (निमेष) आंख को मींचना (उन्मेष) आंख को खोलना (मन) निश्चय स्मरण और अहंकार करना (गति) चलना (इन्द्रिय) सब इन्द्रियों का चलना (अन्तर्विकार) भिन्न-भिन्न क्षुधा, तृषा, हर्ष, शोकादि गुण होना, ये जीवात्मा के गुण परमात्मा से भिन्न हैं। इन्हीं में आत्मा की प्रतीति करनी, क्योंकि वह स्थूल नहीं है। जब तक आत्मा देह में होता है तभी तक ये गुण प्रकाशित रहते हैं और जब शरीर छोड़ चला जाता है तब ये गुण शरीर में नहीं रहते। जिसके होने से जो हों और न होने से न हों वे गुण उसी के होते हैं। जैसे दीप और सूर्यादि के न होने से प्रकाशादि का न होना और होने से होना है। वैसे ही जीव और परमात्मा का विज्ञान गुण द्वारा होता है।

सत्यार्थप्रकाश सातवां समुल्लास।

आर्योद्देश्यरत्नमाला में जीव का स्वरूप इस प्रकार लिखा है-

जीव का स्वरूप है। जो चेतन, अल्पज्ञ, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और ज्ञान गुण वाला तथा नित्य है, वह जीव कहाता है। रत्न ७७

इन पाठों में महर्षि ने जीव का वर्णन किया है। सत्यार्थप्रकाश में और प्रकार से भी जीव के स्वरूप पर विचार किया है। उसे यहां लिखना उचित न समझ कर नहीं लिखा।

आगे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से जीवपरक कुछ शब्द लिखे जायेंगे।

(१) उड़ियां हंस दसाइ राह। आइया गइया मुहिआ नाउ।। – राग माझ वार म० १ वार १

(२) जीउ पाइ तन साजिया रखिया वणत वणाइ।

अखीं देखे जिहवा बोले कन्नी सुरत समाइ।।

पैरी चले हथीं करणा दित्ता पैने खाइ।

जिन रचि रचिआ तिसहि न जाणौ अन्धा अन्धा कमाइ।।

– वार माझ म० १ वार २

(३) जो आवहि से जाहि फुनि आइ गए पछताहि।

लख चौरासीह मेदनी घटै न बधै उताहि।।

– राग रामकली म० १ दखणी ओकार ४३

(४) सुंञी देह डरावणी जा जीउ विचहु जाइ।

– श्री राग महला १ शब्द १४

(५) न जीउ मरै न डुबै तरे।

– राग गौडी महला १ शब्द २

(६) हंस चलिया तू पिछे रहीएह छुटड़ होइ अहि नारी।

– राग गौड़ी महला १ शब्द १३

(7) काइया हंस क्या प्रीति है जि पइआ ही छड जाइ।

एसनो कूड बोल के खवालिएं जि चलविआं नाल न जाइ।।

– गुजरी वार मह० ३ वारे ७

(८) कहुं नानक इह जीउ करण वंध होई।

– राग भैरउ महला ३ शब्द १

(९) जीउ पाइ पिंड जिन साजिय। दिता पैनण खाण।।

– राग सोरठ महला ५ शब्द ४४

(१०) दुलभदेह पाई बडभागी। नाम न जपहि ते आत्मघाती।।

– राग गौड़ी महला ५ शब्द १११

(११) मरण हार–एह जीअरा नाहीं।

– राग गौड़ी महला ५ शब्द ११२

(१२) ओह वैरागी मरै न जाइ। हुकमै वधा कार कमाइ।।

– राग आसा महला ५ शब्द ८२

(१३) ना जीउ मरे न कबहूं छीजै।

– राग वडहंस महला ५ शब्द ६

(१३) जागि लेहु रे मना जाग लेहु कहा गाफल सोइआ।

जो तन उपजिया संग ही सो भी संग न होइआ।।

मात पिता सब बंध जन हित जासउ कीना।

जीव छुटकियो जब देहते डार अग्नि में दीना।।

– राग तिलंग महला ९ शब्द २

(१४) लख चउरासीह जोनि भ्रम आइयो।

– राग गौडी कबीर जी शब्द ६२

(१५) लट छिटकाएं तिरीआ रोवे हंस अकेला जाई।

– राग आसा कबीर जी शब्द ९

(१६) मरघट लउ सब लोग कुटंब भइयो आगे हंस अकेला।

– राग सोरठ कबीर जी शब्द २

(१७) काचे करवे रहे न पानी। हंस चलिआ काइआ कुमलानी।।

– राग सूही कबीर जी शब्द २

(१८) कह कबीर एह राम की अंस। जस कागद पर मिटे न मस।।

– राग गौड कबीर जी शब्द ५

(१८) पंच किरसानवा भाग गए ले बांधियो जीव दरबारी।

– मारू कबीर जी शब्द ७

(१९) जल की भीति पवन का थंभा रक्त बूंद का गारा।

हाड़ मास नाड़ी का पिंजर पंखी वसे विचारा।।

– राग सोरठ रविदास शब्द ६

(२०) हंस चलसी डूंमणा अहितन ढेरी थीसी।

– राग सूही फरीद जी शब्द २

इन सब शब्दों में जीव का वर्णन है। इनके अतिरिक्त जीव विषयक और शब्द भी हैं। मैं इतने ही पर्याप्त मानकर इसे समाप्त करता हूं इनमें जीव को न मरने वाला, कर्म करने वाला आदि गुणयुक्त लिखा है।

पुस्तक - समीक्षा

पुस्तक नाम- वेद, वेद मन्तव्य व महर्षि दयानन्द जीवन-दर्शन।

सम्पादक-ओम्प्रकाश आर्य, **प्रकाशक**- सुखदेव आर्य।

पृष्ठ संख्या - ११२ **अंकित मूल्य** - ११००रू./

प्राप्ति मूल्य - ५००/- रू.

प्राप्ति हेतु सम्पर्क : सुखदेव आर्य, इन्दौर, म.प्र.।

गत १३ वर्षों से निरन्तर प्रकाशित 'वैदिक संसार' मासिक का महर्षि दयानन्द सरस्वती की द्विजन्म-शताब्दी के ऐतिहासिक अवसर पर प्रकाशित इस विशेषांक में लगभग पचास चित्रों के माध्यम से वैदिक सिद्धान्तों और चुने हुए वेदमन्त्रों के रहस्यों को सरलता से समझाने का अच्छा प्रयास किया गया है। जैसे यज्ञ-विज्ञान, परमात्मा के सौ नाम, मुक्ति के साधन, वर्णव्यवस्था, वैदिक साहित्य का सचित्र परिचय आदि। तदनन्तर महर्षि दयानन्द के जीवन की प्रेरक घटनाओं की सचित्र और सजीव झांकी देखने को मिलती है। साथ ही देश-विदेश के विद्वानों, विचारकों व राजनेताओं के महर्षि दयानन्द विषयक विचारों का पठनीय संग्रह भी है। महर्षि दयानन्द के उपलब्ध वास्तविक चित्रों का अनूठा संकलन देकर आगामी पीढ़ियों के लिए अमूल्य उपहार दिया गया है। अन्त में आर्यसमाज के उन महापुरुषों के चित्रों को संजोकर रखा है, जिन्होंने देश, धर्म व जाति के लिए अपना तन, मन, धन समर्पित कर दिया।

प्रस्तुत विशेषांक आर्ट पेपर पर उत्तम जिल्द व मोटे टिकाऊ पैकेट में सुरक्षित है। सैद्धान्तिक समझ विकसित करने वाली सामग्री से भरपूर यह ग्रन्थ सब स्वाध्याय प्रिय ऋषिभक्त आर्य के लिए पठनीय, चिन्तनीय व संग्रहणीय है। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन व ऋषि मेले (अजमेर) पर यह उपलब्धता तक मात्र ५००रू. में प्राप्त किया जा सकता है। प्रतियां सीमित है, इच्छुक आर्य सज्जन अपनी प्रति पहले सुरक्षित करना चाहें तो प्रकाशक सुखदेव शर्मा से चलभाष पर चर्चा करके ऐसा कर सकते हैं।

ऋषि उद्यान में ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों, संन्यासियों को साधना, स्वाध्याय, सहयोग के लिए निमन्त्रण

अजमेर में **ऋषि उद्यान** आनासागर नामक झील के सुरम्य तट पर स्थित है। इसका संचालन महर्षि की उत्तराधिकारिणी श्रीमती परोपकारिणी सभा करती है। वृक्षावलियों एवं पुष्पोद्यान से सुशोभित यह आश्रम महर्षि-भक्तों का ध्यान आकर्षित करता रहता है। इस आश्रम में ही सभा द्वारा विभिन्न प्रकल्प संचालित किए जा रहे हैं। यहाँ देशी गायों की वृहद् गोशाला है, ब्रह्मचारियों के विद्याभ्यास के लिए गुरुकुल की व्यवस्था है। समागत अतिथियों के निवास व भोजन इत्यादि की उत्तम व्यवस्था है। इस आश्रम में दोनों समय सन्ध्या व यज्ञ का आयोजन किया जाता है। यह स्थान स्वाध्याय, योगाभ्यास एवं विद्याप्राप्ति का आदर्श केन्द्र है। समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रमों, योगशिविरों, आर्यवीर-वीरांगनाओं के शिविरों, विशिष्ट विद्वानों के व्याख्यान इत्या दि का आयोजन इसकी जीवंतता के प्रमाण हैं।

सभी आर्य ब्रह्मचारियों तथा विशेषत: वानप्रस्थियों, संन्यासियों से निवेदन है कि अपनी आध्यात्मिक उन्नति एवं तप-स्वाध्याय के लिए स्थायी रूप से आश्रम में रहकर अपने जीवन को सार्थक करें तथा अपनी योग्यतानुसार सभा के प्रकल्पों में सहयोग करें।

ऋषि उद्यान में सोद्देश्य निवास करने के लिए इच्छुक आर्यजन कृपया अधोलिखित चलभाष-दूरभाष पर सम्पर्क करें -

१. श्री ओम्मुनि वानप्रस्थ (प्रधान) - 9950999679

२. श्री कन्हैयालाल आर्य (मन्त्री) - 9911197073

३. श्री रमेशचन्द्र आर्य, (ऋषि उद्यान) -9413356728

पुरुष अध्याय - यजुर्वेद ३१

प्रवचनकर्त्ता- डॉ. धर्मवीर
लेखिका - सुयशा आर्या

प्रिय पाठक! परोपकारी पिछले कई वर्षों से आपकी सेवा में डॉ. धर्मवीर जी के वेद प्रवचनों को प्रकाशित कर रही है। इसी शृंखला में यजुर्वेद-३१ 'पुरुष अध्याय' की व्याख्यानमाला प्रकाशित की जा रही है। प्रवचनों को लेखबद्ध करने का कार्य डॉ. धर्मवीर की ज्येष्ठ पुत्री श्रीमती सुयशा कर रही हैं।

-सम्पादक

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः
ततो विष्वङ् व्यक्रामत् साशनानशनेऽअभि।

हमारी चर्चा को हम आगे बढ़ाते हैं। इससे पहले के प्रकरण में हमने कुछ बातों को अनुभव किया था और उनसे हमारी यह समझ में आया था कि इस संसार में जो सत्तायें हैं तो तीन प्रकार से काम कर रही हैं या तीन रूप में हैं। एक सत्ता, जो हम द्रष्टा के रूप में हैं, एक सत्ता, जो सामने दृश्य के रूप में है और एक ओझल सत्ता जो इन दोनों के अनदर नियामक, व्यवस्थापक या नियन्त्रक के रूप में है। हमारी जो सत्ता है, यदि केवल हम इसकी ही सत्ता को स्वीकार करें और दूसरे को स्वीकार न करें तो हमारा जो अस्तित्व है, इस अस्तित्व का निर्माण हमसे नहीं हुआ है। इसलिए हमारी सत्ता के साथ-साथ एक और सत्ता है और यह जो सत्ता है, यह निर्मत है और हमारे द्वारा निर्मित है नहीं तो इसलिए किसी के द्वारा निर्मत होनी चाहिए तो जिसके द्वारा निर्मित है उसको भी मानने की आवश्यकता है। तो इस पूरे अध्याय में इन सब बातों को यथायोग्य दृष्टि से समझाया गया है और उनकी उपस्थिति कैसी है, उनका विस्तार कितना है, उनकी कार्य क्षमता क्या है, यह इन मन्त्रों को पढ़ने से समझ में आता है।

आज हम इस अध्याय के चौथे मन्त्र की चर्चा कर रहे हैं चौथा मन्त्र है- त्रिवादृर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः ततो विष्वङ् व्यक्रामत साशनानशनेऽअभि। इन मन्त्रों को शब्दार्थ में हम जैसे पहले देखते हैं वैसा देखेंगे।

यह जो पुरुष है, जिसकी आप चर्चा कर रहे हो, वो ऊर्ध्व में त्रिपाद है। अर्थात् तीन गुना तक वह फैला हुआ है। ऊर्ध्व यहाँ बाहर के लिए वाचक है। संसार की जो स्थिति है, उपस्थिति है, सीमा है उससे बड़ा बताने के लिए है। उदैत्पुरुषः ऐतिगच्छति वह गया हुआ है। वह तीन गुना ऊँचे तक गया हुआ है, विस्तार में पहुँचा हुआ है। पादोऽस्येहा भवत् पुनः और इस संसार में उसका जो अस्तित्व है, सारे संसार का अस्तित्व उसके एक चौथाई भाग में है। ततो विष्वङ् व्यक्रामत् साशनानशनेऽअभि। इस चर्चा को पहले मन्त्र में जैसे कहा गया था 'सहस्त्र शीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्' और पुरुषऽएवेदम् सर्वम् यद्भूतम् यच्चभाव्यम् इन मन्त्रों में कही गयी बात को पुष्ट किया जा रहा है। कहता है कि उसका जो एक पग है, एक स्थान है, उसमें सबको अतिक्रान्त किया है। यहाँ व्यक्रामत् शब्द है- क्रमु पाद् विक्षेपे अर्थात् सब कुछ को अपने नीचे दबा रखा है। अपने सामर्थ्य के अन्दर बाँध रखा है और किसको बाँध रखा है- साशनानशनेऽअभि। साशन, जो खाता है, उपभोग करता है, अन्दर लेता है और अनशन जो नहीं लेता है अर्थात् जहाँ लेना सम्भव नहीं है। तो संसार दो तरह का हमको दिखाई देता है। हमने इसकी चर्चा पहले की, कि हमें यहाँ जानना हो कि कितनी चीजें हैं, इस संसार में कितनी वस्तुऐं हैं जिनको जानना है तो नियम यह है कि जैसी-जैसी वस्तुएँ एक जैसी हैं उन एक जैसी वस्तुओं को हम

एक ओर कर लेते हैं, उनका एक वर्ग बना लेते हैं। जैसे हम समूह में बैठे लोगों को जानना चाहते हैं तो देखते हैं कि इनमें स्त्री हैं, कुछ पुरुष हैं। तो दो वर्ग बन जाते हैं। उसमें बच्चे हैं, बड़े हैं तो दो वर्ग बन जाते हैं अर्थात् हम को जो-जो एक जैसे दिखाई दें उनका एक वर्ग बन जाता है। तो इस संसार को जब हम देखते हैं तो दो वर्ग हमारी समझ में आ जाते हैं। एक वर्ग को हम जड़ कहते हैं, एक वर्ग को हम चेतन कहते हैं। अर्थात् जहाँ पर क्रिया अपने आप नहीं हो रही है, क्रिया कोई दूसरा कर रहा है, दूसरे के कारण से जब क्रिया हो रही है या परिवर्तन आ रहा है, उसे हम जड़ कहते हैं सुख है दु:ख है, राग है, द्वेष है, इच्छा है यह सब बातें जिसके साथ नहीं जुड़ती जिसके अनुभव में नहीं आतीं, हम उसे जड़ कहते हैं ओर जहाँ सुख-दु:ख इच्छा द्वेष, रागादि पाये जाते हैं अनुभव किए जाते हैं उसे हम चेतन कहते हैं। तो इस संसार के समस्त पदार्थों पर यदि हम दृष्टि डालें और एक-एक का विवेचन करके देखें तो दोनों में से एक में आ जाएगा। कोई भी पदार्थ दुनिया का ऐसा नहीं है जो इनमें न हो या तो जड़ के वर्गीकरण में होगा या चेतन के वर्गीकरण में होगा, तीसरे किसी वर्गीकरण में नहीं होगा। जो जड़ में है उन्हें हम भूत, पदार्थ, प्रकृति, संसार आदि कहते हैं ओर जो चेतन है उसे हम जीव कहते हैं, प्राणी कहते हैं, जीवात्मा कहते हैं, शरीरधारी कहते हैं। तो यह दोनों चीजें ही होतीं तो यह दोनों तो बहुत आसानी से हमारी समझ में आ जाती है। दोनों का हमारे पास बोध है, दोनों को जानने के साधन हैं। हम किसी को आँख से, किसी को कान से, किसी का देखकर, किसी को स्पर्श करके जानते हैं। जो सूक्ष्म है उसे मन से, कल्पना से, उपकरण से, परीक्षण से जानते हैं और जो इनको चाहता है, इनका उपयोग करता है इनसे हानि-लाभ उठाता है, उसको भी हम जानते हैं। वह एक चेतन सत्ता है।

तो अब हमारी समझ में आया कि यह संसार जो है, वह दिखाई देता है। तो क्या संसार सदा ही दिखाई देता है? ऐसा तो नहीं है। संसार की बहुत सी वस्तुएँ दिखाई भी देती हैं और बहुत सारी वस्तुएँ दिखाई नहीं भी देती हैं। इसके भिन्न-भिन्न कारण हो सकते हैं- प्रमुख कारण यह होता है, कभी स्थूल है और कभी यह सूक्ष्म है। अर्थात् कभी यह कार्य रूप में है, तो कभी कारण रूप में है। जब यह संसार कार्य रूप में होता है तो दिखाई देता है। जब यह संसार कारण रूप में चला जाता है तब दिखाई नहीं देता है। संसार की वस्तुओं का भी यही हाल है। संसार की वस्तुऐं जब अपने सूक्ष्म रूप में रहती हैं तो दिखाई नहीं देती है, जब अपने स्थूल रूप में भी आती हुई दिखाई देती है और सूक्ष्म रूप में भी जाती हुई भी दिखाई देती है अर्थात् उनमें परिवर्तन होता है। वो कार्य रूप में अलग तरह से दिखाई देती है और कारण रूप में अलग दिखाई देती है। यह जो परिवर्तन उनमें निरन्तर होता रहता है या हो सकता है इसलिए उनका स्वभाव अनित्य माना गया। अर्थात् वो सदा एक जैसी नहीं रहतीं। यदि हम विचार करें कि हमारे पास जो दूसरी चीज है 'चेतन' क्या उसमें भी कोई परिवर्तन होता है? क्या वह भी घटता और बढ़ता है? जो चीज घटती और बढ़ती है उसमें आकार का आना- यह समझ में आता है। पदार्थ का सूक्ष्म रूप है तो दिखाई नहीं दे रहा है, स्थूल रूप है तो दिखाई दे जाएगा। तो क्या आत्मा के साथ भी ऐसा हो जाएगा? कि आत्मा अगर स्थूल हो जाए तो दिखाई दे जाए, यदि सूक्ष्म हो तो दिखाई न दे? किन्तु हम ऐसा समझते हैं कि शरीर के रूप में वह स्थूल है तो दिखाई दे रहा है और शरीर नहीं रहेगा तो सूक्ष्म होगा और दिखाई नहीं देगा। लेकिन हमें एक बात समझनी चाहिए कि शरीर के रूप में यदि स्थूल दिखाई देता, तो यह शरीर ही आत्मा होता। जैसे, प्रकृति स्वयं ही बढ़ती है और स्वयं ही घटती है। एक चीज जिससे कोई चीज बन रही है, वह स्वयं है। वह दोनों जड़ ही हैं। मतलब बढ़ी है तब भी जड़ है और घट रही है तब भी जड़ है तो

क्या जीवात्मा ऐसा ही है? यदि जीवात्मा को बढ़ने-घटने वाला मानेंगे तो यह चेतन नहीं होगा यह अविनाशी नहीं होगा। तब इस स्वरूप परिवर्तन वाला हो जाएगा। वो आकार वाला हो जाएगा। आकार वाला नहीं होगा तो अपरिवर्तनीय होगा। इसलिए जो मनुष्यों का, प्राणियों का जीवों का आत्मा है, वो चेतन है और चेतन जो है निराकार है। यदि एक चेतन निराकार है तो दूसरा चेतन साकार हो ही नहीं सकता। या उसके साकार होने की सम्भावना उसी तरह से नहीं होगी जैसे एक निराकार चेतन की सम्भावना नहीं है तो हमें दो बातें बहुत अच्छी तरह से समझ में आ जाती हैं कि इस संसार में कुछ पदार्थ जड़ हैं और कोई चेतन है। अब हमें सन्देह कहाँ होता है, कि संसार में जो स्थान है वहाँ संसार के सब पदार्थों पर हमारा अधिकार नहीं है। सब पदार्थ हमारी इच्छानुसर नहीं चलते हैं। सब पदार्थों का हम उपयोग नहीं ले सकते हैं। सब पदार्थों का हमें ज्ञान-विज्ञान नहीं है। पदार्थों का ज्ञान -विज्ञान हुए बिना उनका उपयोग व उनसे क्रिया सम्भव नहीं है। यहाँ पर एक बात समझ में आती है कि कोई और चीज है और वो कैसी हो सकती है यह सोचकर देखें तो या तो वह जड़ हो सकती है या चेतन हो सकती है। यदि वह चेतन होगी तो क्या वह हमारे जैसी होगी और जड़ होगी तो संसार से कैसे भिन्न होगी? तो संसार से भिन्न कोई वस्तु हमें दिखाई देती। संसार से भिन्न किसी वस्तु के अस्तित्व का पता नहीं लगता। जो कुछ है वह यही संसार है और इन्हीं पदार्थों से किसी का बनना और किसी का बिगड़ना चलता है।

किन्तु चेतन के साथ ऐसा नहीं है। चेतन जो जानता है जैसा जो कर रहा है, जैसा है, इसमें हमें दो बातें अलग-अलग दिखाई देती है कि जैसे जड़ वस्तु अनेक होने पर भी मूल रूप से एक है, परन्तु चेतन वस्तु अनेक होने पर एक नहीं है। अनेक रूप होने पर यह अनेक ही हैं। तो जैसे एक मनुष्य, एक प्राणी, एक ही समय में गाय, घोड़ा, गधा, कुत्ता आदि नहीं होता, जड़ वस्तु एक समय में जड़ होती है। चेतन वस्तु एक समय में चेतन होने पर भी चेतन का जो गुण है वे भिन्न-भिन्न है। अर्थात् मेरा अनुभव दूसरे के अनुभव से भिन्न है तो हमारा जो अनुभव, हमारा जो सुख, हमारा जो दुःख, हमारा जो सामर्थ्य, हमारी जो शक्ति, यह हमारे अस्तित्व को अलग-अलग विभाजित कर रहे हैं, हमारी अनेकता को बता रहे हैं। इसको यदि हम दर्शन की भाषा में कहें तो वहाँ कहा कि यदि चेतन एक होता तो इसको एक साथ ही उत्पन्न होना चाहिए था। किन्तु एक मर रहा है, दूसरा उत्पन्न हो रहा है, एक जवान है एक बच्चा है, एक बूढ़ा है, एक रोगी है। इससे पता लगता है कि हम सब अलग-अलग है। अर्थात् हम चेतन हेने पर भी अलग-अलग हैं और प्रकृति सारी अलग दिखने पर भी एक है। इन दोनों में एक विशेष अन्तर है तो यह जो चेतन और जो जड़ है इसमें क्रिया जो है वो हमारे से, हम जैसो में अलग दिखाई दे रही है। जैसे हमारा शरीर उत्पन्न हुआ और हमने उत्पन्न नहीं किया लेकिन दोनों शरीर उत्पन्न हुए तो दोनों का उत्पादक एक होना चाहिए, क्योंकि एक ही तरह से उत्पन्न हुए हैं, एक ही तरह से बढ़ रहे हैं, एक ही नियम से जीवित हैं और एक ही नियम से मर रहे हैं। एक ही नियम से निर्माण हो रहा है और एक ही नियम से विनाश हो रहा है। तो भिन्न-भिन्न चेतन जो प्राणी है इनके जो साधन है, शरीर हैं इनका निर्माण एक नियम से, एक क्रिया से, एक ज्ञान से हो रहा है इसलिए उन सब क्रियाओं का कर्त्ता एक होना चाहिए और उन क्रियाओं के कर्त्ता हम नहीं हैं हम स्वयं नहीं हैं इसलिए दो बात सिद्ध हो गयीं। एक तो जो हम चेतन भोक्ता है, इस संसार में वो भिन्न-भिन्न अनुभवों के कारण से, भिन्न समयों में उत्पन्न होने के कारण से, भिन्न-भिन्न संस्कारों के कारण से, प्रवृत्तियों के कारण पाप-पुण्य के विचार के कारण से भिन्न है। किन्तु हम सबके अन्दर जो चेतन से बाहर अचेतन सत्ता है उसका जो का हो रहा है वो मेरे साथ भी वैसा ही हो रहा है और

दूसरे के साथ भी वैसा ही हो रहा है, तो इन दोनों में एक सी क्रिया एक कर्त्ता को बता रही है। तो इस तरह जो चेतन है वह स्पष्ट हो जाता है। इस संसार में जो जड़ पदार्थ है वो सारे जड़ अनेक दिखने पर भी एक ही कारण से पैदा हुए हैं, क्योंकि उनके अन्दर समानता है। वे वापस उसी रूप में आते हैं। लेकिन प्राणी के साथ ऐसा नहीं है। ये दिखने पर भी नहीं दिखने पर भी (केवल इनके बाहरी साधनों से इनके दिखने न दिखने का अन्तर पड़ता है) ये शरीरधारी होने पर हमें दिखने जैसे लगते हैं। वास्तव में इनके स्वरूप में कोई परिवर्तन कभी भी नहीं होता इसलिए ये अपरिवर्तित होने से जैसे हैं वैसे ही रहते हैं। ये अनेक हैं तो सदा अनेक ही रहेंगे। यदि ये एक से अनेक या अनेक से एक होंगे तो परिवर्तन वाले हो जायेंगे और जब किसी के स्वरूप में परिवर्तन होने लगेगा, तो वह चीज अनित्य हो जाएगी, सदा नहीं रहने वाली होगी। उस दृष्टि से मन्त्र जो बात कह रहा है वह जो परमेश्वर चेतन है वो साशन और निरशन जो चेतन वस्तुएँ हैं और जो जड़ वस्तुऐं है उन दोनों में व्याप्त है। इसलिए उसकी जो क्रिया है वो चेतन में भी दिखाई देती है और जड़ में भी दिखाई देती है। उसका नियम चेतन में भी दिखाई देता है और उसका नियम जड़ में भी दिखाई देता है। इसलिए वह सत्ता इन दोनों सत्ताओं से भिन्न है।

तो इस तरह से, इन मन्त्रों से हमें इस संसार की परिस्थितियों का बोध होता है और इसको सही जानने से इसका सदुपयोग सम्भव है।

आभूषण

सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना माता, पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है। सोने, चाँदी, माणिक, मोती, मूंगा आदि रत्नादि से युक्त आभूषणों के धारण कराने से मनुष्य का आत्मा सुभूषित कभी नहीं होता क्योंकि आभूषणों के धारण करने से केवल देहाभिमान, विषयासक्ति और चोर आदि का भय तथा मृत्यु का भी सम्भव है।

सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास

परोपकारिणी सभा अजमेर के नवीन प्रकाशन रियायती मूल्यों पर महर्षि दयानन्द सरस्वती की २००वीं जन्म-जयन्ती शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में ५० प्रतिशत की छुट

पुस्तक का नाम	वास्तविक मूल्य रुपये
विवाह पद्धति	२०
शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण	०२
वेदान्तिध्वान्त निवारण	०२
समाधी	१००
सामवेद शतक	३०
जिज्ञासा विमर्श	१००
इतिहास प्रदूषण	१००
इतिहास साक्षी	५०
वेदामृत	५०
सत्यासत्य निर्णय	२५
The Book of Prayer	35
Kashi Debate	20
A Critique of Swami Naryan Seet	20
An Examination of Vallabh Seet	20
Five Great Rituals of The Day	20
Bhramaccheden	25
Bhranti Nivarana	35
Atmakatha	20
Gokarunanidhi	12
Dayanand Interparetation of Vedas	05
संध्या सुरभि कलेण्डर	३५
महर्षि दयानन्द की शिक्षाएँ कलेण्डर	२५
The Pre Islamic Religious of Arabia	20
वेदमाता	१००
शंका समाधान	७०
ईश्वर	१५०
नवयुग की आहट	६०
वैदिक इस्लाम	१०
पं. आत्माराम अमृतसरी	१००
इतिहास बोल पड़ा	१००
मृत्यु सूक्त	२००
सत्यार्थ सुधा	१५०
वैदिक चिन्तन की नई दिशा	१३०

पुस्तकों हेतु सम्पर्क करें:-

दूरभाष-0145-2460120,चलभाष- 7878303382

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्यसमाज स्थापना के सार्द्ध (१५०वाँ) शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में

१४२ वाँ ऋषि मेला समारोह

कार्तिक कृष्ण चतुर्थी से षष्ठी, संवत् २०८२ तदनुसार दिनांक १०, ११, १२ अक्टूबर २०२५

विराट् व्यक्तित्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की एकमात्र उत्तराधिकारिणी संस्था परोपकारिणी सभा, अजमेर ऋषि मेला का आयोजन कर रही है। इस अवसर पर कई सम्मेलनों (कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, वेद रक्षा सम्मेलन, परमात्मा और आत्मा : ज्ञान विज्ञान की कसौटी पर, वैदिक दर्शनों और उपनिषदों का सन्देश, आर्यसमाज और युवा जगत्-कितना निकट कितना दूर, भारतीय संविधान-कितना भारतीय कितना अभारतीय, आज की राजनैतिक स्थिति में आर्यसमाज की भूमिका, महर्षि दयानन्द की विश्व को देन, परोपकारिणी सभा का आर्यसमाज की प्रगति में योगदान) का आयोजन होगा।

कार्यक्रम स्थल- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

अथर्ववेद पारायण यज्ञ- का आरम्भ सोमवार ०६ अक्टूबर से होगा व इसकी पूर्णाहूति समापन समारोह के अन्तिम दिन १२ अक्टूबर को प्रातः १० बजे होगी। इस यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक (गुरुकुल होशंगाबाद) होंगे।

विशेष आकर्षण

१. इच्छुक व्यक्तियों को वानप्रस्थ एवं संन्यास की दीक्षा।
२. ऋषि दयानन्द के जीवन पर प्रदर्शनियाँ।
३. वेद कण्ठस्थीकरण की परीक्षा।
४. ऋषि दयानन्द के जीवन पर विशेष गोष्ठियाँ, नाटिकायें।
५. आर्य साहित्य एवं यज्ञादि उपकरणों का विक्रय।
६. कार्यकर्त्ताओं तथा विद्वानों का सम्मान
७. श्री गजानन्द आर्य स्मृति वेदगोष्ठी (वेदों और ऋषि दयानन्द के मत में ईश्वर का स्वरूप)

ऋषि लंगर- इस अवसर पर पधारने वाले श्रद्धालुओं के लिए पौष्टिक एवं स्वादिष्ट प्रात:राश तथा दोनों समय भोजन की व्यवस्था परोपकारिणी सभा की ओर से होगी।

आवास-व्यवस्था- आप यदि समूह में रहना चाहेंगे तो ऋषि उद्यान तथा इसके अतिरिक्त विभिन्न विद्यालयों, आर्यसमाजों एवं धर्मशालाओं में व्यवस्था की जायेगी। यदि आप अपने लिए अलग से कमरों की व्यवस्था करना चाहते हैं तो निम्न दूरभाषों पर कम से कम १५ दिन पूर्व सूचना दे दें ताकि होटलों में व्यवस्था की जा सके। आप अपने आने के लिए निम्नलिखित दूरभाष पर रजिस्ट्रेशन अवश्य करा लें ताकि आपके आवास में कोई कठिनाई न हो।

सम्पर्क सूत्र - १. श्री रमेशचन्द भाट - 9413356728, २. श्री वासुदेव आर्य - ९४६०११२०९२

आप से निवेदन है कि आप इस अवसर पर अवश्य पधारें। ऐसा अवसर आप के जीवन में दूसरी बार नहीं आयेगा तथा सभी जन अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकर्त्ताओं सहित पधारकर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें। महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा व उत्साह प्राप्त कर वेद धर्म के प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

इस महान् पर्व पर आर्यजगत् के अनेक प्रसिद्ध संन्यासी, मुनि, विद्वान्, विदुषी, भजनोपदेशक एवं राजनैतिक जगत् के कई महानुभाव पधार रहे हैं।

संन्यासी- स्वामी विदेह योगी (कुरुक्षेत्र), स्वामी ओमानन्द सरस्वती (गुरुकुल माउण्ट आबू)

परोपकारिणी सभा से जुड़े वैदिक विद्वान्- आचार्य विरजानन्द दैवकरणि, डॉ. योगानन्द शास्त्री, डॉ. सुरेन्द्र कुमार, डॉ. वेदपाल, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, डॉ. वेदप्रकाश विद्यार्थी, श्री सज्जनसिंह कोठारी

अन्य आर्य विद्वान्- डॉ. ज्वलन्त शास्त्री, डॉ. रामप्रकाश वर्णी, डॉ. नरेश धीमान्, आचार्य कमलेश शास्त्री, आचार्य विजयपाल, डॉ. जगदेव विद्यालंकार, आचार्य धनञ्जय, डॉ. आनन्द कुमार (पूर्व आई.पी.एस.) आचार्य ऋषि पाल, डॉ. रामचन्द्र, डॉ. निखिल आर्य।

वैदिक विदूषी- आचार्या सूर्या देवी, आचार्या सुमेधा, पद्मश्री आचार्या सुकामा, आचार्या प्रीतिविमर्शनी

आर्यनेता- श्री सुरेश आर्य (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली), ठाकुर विक्रमसिंह (अध्यक्ष, राष्ट्र निर्माण पार्टी), श्री देशबन्धु आर्य (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा), आचार्य जीववर्धन शास्त्री (मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राज.), श्री उमेद शर्मा (मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा), श्री विनय गुप्ता (डॉलर ग्रुप)

भजनोपदेशक- श्री विवेक पथिक (पंजाब) सुपौत्र स्व. श्री सत्यपाल पथिक

मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य,

चेयरमैन, जे. बी. एम. ग्रुप उपस्थित रहेंगे।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप आयकर मुक्त होगा। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। सहयोग हेतु निम्न खातों का प्रयोग करें। ऋषि लंगर हेतु आटा, चावल, दाल, चीनी, घी, तेल आदि सामग्री भी प्रदान कर सकते हैं।

खाताधारक का नाम : परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINISABHA AJMER)

बैंक का नाम : भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर, बैंक बचत खाता संख्या : 10158172715

IFSC - SBIN0031588 UPI ID : PROPKARNI@SBI

निवेदक - ओम्मुनि वानप्रस्थी (प्रधान) कन्हैयालाल आर्य (मन्त्री)

अधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य- डॉ. सुरेन्द्र कुमार- संरक्षक, पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, डॉ. वेदपाल-संरक्षक एवं सम्पादक परोपकारी, श्री सज्जनसिंह कोठारी, सभा उपप्रधान, जयपुर, श्री दीनदयाल गुप्त, सभा उपप्रधान, श्री जयसिंह गहलोत, सभा उपप्रधान, जोधपुर, डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा, सभा संयुक्त मन्त्री, अजमेर, श्री लक्ष्मण जिज्ञासु, सभा कोषाध्यक्ष, नोयडा, आचार्य विरजानन्द दैवकरणि, पुस्तकाध्यक्ष, गुरुकुल झज्जर, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, अन्तरंग सदस्य, कुरुक्षेत्र, श्री वीरेन्द्र आर्य, अन्तरंग सदस्य, अजमेर।

अन्य ट्रस्टीगण- श्री शत्रुघ्न आर्य, श्री सुभाष नवाल, मुनि सत्यजित्, स्वामी विष्वङ् परिव्राजक, श्री विजयसिंह भाटी, श्र काश विद्यार्थी, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, श्री सत्यानन्द आर्य, डॉ. योगानन्द शास्त्री।

आयोजक- परोपकारिणी सभा, अजमेर

(महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की एकमात्र उत्तराधिकारिणी संस्था)

दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर, राज.

ओ३म्

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर (राज.) ३०५००१ दूरभाष- ०१४५-२४६०१६४

श्री गजानन्द आर्य स्मृति वेदगोष्ठी-२०२५

विषय- वेदों और महर्षि दयानन्द के मत में ईश्वर का स्वरूप

मान्यवर सादर नमस्ते।

आशा करता हूँ कि आप स्वस्थ सानन्द होंगे। आपको सुविदित है कि सद्भावी विद्वानों के सहयोग से पूर्व की भांति इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ, दिल्ली तथा अनुसन्धान विभाग परोपकारिणी सभा, अजमेर के संयुक्त तत्त्वावधान में ऋषि मेले के अवसर पर वेदगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस गोष्ठी में देश के अनेक भागों से पधारे प्रख्यात वैदिक विद्वान् निर्धारित विषयों पर अपने शोधपूर्ण विचार प्रस्तुत करते हैं। इनमें से चुने हुए शोध-पत्र परोपकारी व वेदपीठ की शोध-पत्रिका के माध्यम से प्रकाशित किये जाते हैं, जिससे जो लोग गोष्ठी में नहीं आ सकते वे भी लाभान्वित होते हैं। विद्वानों को भी इस विषय पर अधिक विचार करने का अवसर मिलता है। गत ३३ वर्षों से गोष्ठी का आयोजन निरन्तर किया जा रहा है।

वेदगोष्ठी-२०२५ के विषय

1. वेद और ईश्वर
2. वेदों और महर्षि दयानन्द के अनुसार 'ब्रह्म', 'ईश्वर' और 'परमेश्वर' पदों की विवेचना।
3. वेदोक्त ईश्वर का स्वरूप
4. वेदोक्त ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का स्वरूप
5. वेदोक्त ईश्वर के सम्बन्ध में अन्य सम्प्रदायों के मन्तव्यों और महर्षि दयानन्द के एत्सम्बन्धी विचार।
6. महर्षि दयानन्द एवं अन्य वेद-भाष्यकारों के मत में वेदोक्त ईश्वर का स्वरूप।
7. नवीन वेदान्त एवं शंकराचार्य की ईश्वरपरक मान्यताओं की समालोचना।
8. ईश्वर-जीव-प्रकृति की वेदवर्णित अवधारणा।
9. महर्षि दयानन्द द्वारा महाभारतोत्तर वेद-ईश्वर-सम्बन्धी अनार्ष धारणाओं का खण्डन।
10. महर्षि दयानन्द के अनुसार वेदोक्त ईश्वर और उसके अस्तित्व की सिद्धि में दिए गए तर्क व प्रमाण।
11. महर्षि दयानन्द के वैदिक मतानुसार ईश्वर की प्रासंगिकता-आवश्यकता और उसकी उपासना की विधि।
12. महर्षि दयानन्द के मन्तव्यानुसार ईश्वरीय ज्ञान का स्वरूप।
13. वेदोक्त ईश्वर की उपासना की विधियाँ और लाभ।
14. वेदोक्त ईश्वर के मुख्य तथा अन्य गुणवाची नामों का यथार्थ एवं उनकी सार्थकता।
15. ईश्वर के स्वरूप और वेद के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द के मौलिक विचार।
16. महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट ईश्वरोपासना की अन्य उपासना-पद्धतियों से तुलना।
17. ईश्वर की त्रिकालज्ञता का यथार्थ स्वरूप।
18. ईश्वर का जगत्कर्तृत्व।
19. 'स्वाभाविकी ज्ञान-बल-क्रिया च' की वैदिक विवेचना।
20. ईश्वर के सगुण-निर्गुण रूपों की विवेचना।
21. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदिमूल परमेश्वर है- इस वाक्य की विवेचना।

सहायक ग्रन्थ

१. ऋग्वेद   २. यजुर्वेद   ३. सामवेद   ४. अथर्ववेद   ५. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

६. सत्यार्थ प्रकाश   ७. भावार्थप्रकाश- । (सत्यानन्द जी वेदवागीश)

८. भावार्थप्रकाश- ।। (सत्यानन्द जी वेदवागीश)

९. ओ३म् प्रत्यक्षम् (स्वामी सत्यप्रकाश जी)

१०. सन्ध्यायोग-ब्रह्मसाक्षात्कार (ब्र. जगन्नाथ पथिक)

११. अनासक्तियोग- मोक्ष की पगडंडी (ब्र. जगन्नाथ पथिक)

१२. ब्रह्मविद्या (स्वामी कृष्णानन्द जी)   १३. ध्यानयोगप्रकाश (स्वामी लक्ष्मणानन्द जी)

१४. आस्तिकवाद (पं. गंगाप्रसाद जी)   १५. अद्वैतवाद (पं. गंगाप्रसाद जी)

१६. भूमिका-भास्कर (स्वामी विद्यानन्द जी)   १७. सत्यार्थ-भास्कर (स्वामी विद्यानन्द जी)

१८. आस्तिक विचार (पं. देवप्रकाश जी)   १९. षड्दर्शनों के भाष्य

२०. ग्यारह उपनिषद्

२१. सुधी लेखक प्रकरणानुसार अन्य आर्य-लेखकों व आर्ष वाङ्मय की सहायता ले सकते हैं

२२. विशेष- अनुसन्धाता-लेखक कृपया गोष्ठी में पठनीय शोध-लेख की टंकित प्रति साथ लावें और शोधलेख का सार-संक्षेप भी।

वेदगोष्ठी- संयोजक - डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा- संयुक्त मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

दूरभाष- ९२५७७२०१५६

।। आवश्यक सूचना ।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी सभा अजमेर के द्वारा संस्थापित एवं संचालित महर्षि दयानन्द गुरुकुल आश्रम , ग्राम-जमानी, त-इटारसी, जिला-नर्मदापुरम्, मध्यप्रदेश के नाम से दान की रसीद छपवाकर अनधिकृत रुप से कुछ लोग गुरुकुल के नाम से दान एकत्रित करके धन का दुरुपयोग कर रहे हैं, एकत्रित किये हुए दान को सभा में जमा भी नही करवाते हैं और न ही कोई हिसाब सभा को देते हैं।

आप सभी आर्य महानुभावों से निवेदन है कि अनधिकृत व्यक्तियों को दान न देवे, और यदि उपरोक्त नाम की रसीद से आपने दान दिया है तो उस रसीद को अथवा उसकी फोटोकापी को अति शीघ्र सभा के निम्न पते पर भिजवावे।

जिससे परोपकारिणी सभा द्वारा अनधिकृत रुप से रसीद छपवाकर दान एकत्रित करने वाले व्यक्तियों के विरुद्ध वैधानिक कार्यवाही की जा सके।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, पिन- ३०५००१

दूरभाष - ९९११९९७०७३

महर्षि दयानन्द की २०१वीं जयन्ती के अवसर पर आयोजित दुकान (स्टॉल) आवंटन

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला १०, ११ व १२ अक्टूबर (शुक्रवार, शनिवार व रविवार) २०२५ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्यजगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की दुकान लगती हैं। इस वर्ष से स्टॉल किराया २०००=०० रूपये प्रति स्टॉल किया गया है। खुले में या अपनी इच्छानुसार स्टॅाल लगाना निषिद्ध रहेगा। आप अपना पूर्ण सहयोग देकर इस कार्य में सहयोग करावें। जिन महानुभावों की पहले राशि जमा होगी उस क्रम से स्टॉल का निर्धारण होगा। ऋषि मेला-२०२५ हेतु दुकान (स्टॉल) आवंटन में तीन आधार रहेंगे- १- आर्य धार्मिक पुस्तक, २- हवन सामग्री, ओ३म् ध्वज आदि, ३- दवाईयाँ। आपको जितनी स्टॉल की आश्यकता है उसी अनुरूप राशि बैंक ड्रॉफ्ट या नगद या ऑनलाइन जमा करावें।

स्टॉल सुविधाः- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाइट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**- ७.५×१५ फीट।

ध्यातव्य- **१.** स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। **२.** अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टैन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। **३.** बिस्तर, रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। **४.** स्टॉल व्यवस्थापक को राशि की रसीद दिखाकर स्टॉल संख्या प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉल में सामान न रखें, न अधिकृत करें। **५.** आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें। ६. अपना मोबाइल (चलभाष) नम्बर देना अति आवश्यक है। ७. आप अपना स्थाई पता अवश्य देवें। ८. स्टॉल में आप पुस्तकें/दवाइयाँ/अन्य सामग्री का उल्लेख अवश्य करें। ९. स्टॉल आवंटन हेतु अग्रिम राशि जमा करावें, अन्यथा विचार सम्भव नहीं होगा। १०. एक पासपोर्ट फोटो भिजवावें, जो परिचय पत्र के साथ अंकित हो। उसमें स्टॉल आवंटन संख्या भी अंकित की जायेगी। ११. स्टॉल आवंटन की सूचना निर्धारित अवधि में दी जायेगी। **नोटः**- किसी प्रकार का अवैदिक साहित्य एवं सामग्री न हो अन्यथा उचित कार्यवाही सम्भव होगी।

सम्पर्क-देवमुनि/भूदेव उपाध्याय-७७४२२२९३२७

महर्षि दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान, अजमेर में कई वर्ष से संचालित आयुर्वैदिक चिकित्सालय सोमवार को छोड़ सप्ताह में ६ दिन मार्च से अक्टूबर सायं ५ से ७ बजे तक व नवंबर से फरवरी सायं ४ से ६ बजे तक दो घण्टे खुलेगा।

इसमें वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सक की सेवा उपलब्ध है। चिकित्सा परामर्श व चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। यदि आप अपने धन को इस पुण्य कार्य में लगाना चाहते हैं, तो परोपकारिणी सभा के बैंक खाते में सहयोग भेज सकते हैं। सहयोग भेजकर ८८९०३१६९६१ पर सूचित अवश्य कर देवें।

- मन्त्री

परोपकारिणी सभा अजमेर के नवीन प्रकाशन रियायती मूल्यों पर

पुस्तक का नाम	पृ. सं.	वास्तविक मूल्य रुपये	छूट के साथ मूल्य रुपये
महर्षि दयानन्द सरस्वती का पत्र-व्यवहार (दोनों भाग)	१३९२	८००	५००
महर्षि दयानन्द के हस्तलिखित-पत्र	३३६	२००	१००
कुल्लियाते आर्यमुसाफ़िर (दोनों भाग)	९३८	९५०	६००
डॉ. धर्मवीर का सम्पादकीय संकलन (तीन भाग)	८१४	५००	२५०

यजुर्वेद भाष्य (महर्षि दयानन्द सरस्वती) पृष्ठ संख्या- २१९७, चार भागों का मूल्य = १३००/-
डाक-व्यय सहित विशेष छूट पर उपलब्ध मूल्य = ११००/-

पुस्तकों हेतु सम्पर्क करें:-दूरभाष - 0145-2460120, चलभाष - 7878303382

VEDIC PUSTKALAYA
0510800A0198064
1342679A
0510800A0198064.mab@pnb

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर से क्रय की जाने वाली पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु
खाताधारक का नाम - वैदिक पुस्तकालय, अजमेर
(VEDIC PUSTKALAYA, AJMER)
बैंक का नाम - पंजाब नेशनल बैंक,
कचहरी रोड, अजमेर।
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-
0008000100067176
IFSC - PUNB0000800
UPI ID :
0510800A0198064.mab@pnb

प्रवेश सूचना

परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा ऋषि उद्यान, अजमेर में सञ्चालित आर्ष गुरुकुल में प्रवेश प्रारम्भ हैं। वैदिक धर्म के उपदेशक-प्रचारक बनने के इच्छुक युवा प्रवेश हेतु शीघ्र आवेदन करें।

प्रवेश हेतु अविवाहित एवं आठवीं उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। भोजन एवं आवास की नि:शुल्क सुविधा है। **सम्पर्क सूत्र: ८८९०३१६९६१**

आर्य संस्थाओं से आग्रह

आर्य समाज एवं अन्य आर्य संस्थाएं अपने निर्वाचन, वार्षिकोत्सव और योग शिविर आदि आयोजन के संक्षिप्त समाचार परोपकारी में प्रकाशनार्थ भिजवा सकते हैं।

संस्था की ओर से....

क्या आप प्रतिदिन अतिथि यज्ञ नहीं कर पाते? तो आइये, अतिथि यज्ञ के होता बनिये

वैदिक नित्यकर्मों में पञ्चमहायज्ञ अवश्य करणीय कर्म हैं। इन्हीं में से एक है- अतिथि यज्ञ। प्रत्येक गृहस्थ के लिए अतिथि यज्ञ प्रतिदिन करना अनिवार्य है, किन्तु आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं, फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय? इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और वह राशि एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल/आश्रम में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय। इस राशि को प्रदान कर सभा के माध्यम से अतिथि यज्ञ सम्पन्न कर सकते हैं।

सभा की योजना के अनुसार प्रतिवर्ष ५ हजार एक सौ रु. की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी होता सदस्यों में अंकित किया जाता है, ऐसे सज्जनों के नाम परोपकारी में प्रकाशित भी किये जाते हैं।

आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक/सभा के खाते में ऑनलाइन द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं।

आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि, जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे, तो उन्हें उनके जन्मदिवस आदि पर परोपकारिणी सभा की ओर से दूरभाष द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया जायेगा। यदि उस शुभ अवसर पर वे स्वयं उपस्थित होकर यजमान बनें तो यह सर्वोत्तम होगा।

अतिथि-यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है।

दूरभाष - 8890316961

परोपकारिणी सभा के प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु बैंक विवरण

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715** **IFSC-SBIN0031588**

email : psabhaa@gmail.com **सूचना देने हेतु चलभाष - 8890316961**

‘सत्यार्थ प्रकाश’ एवं ‘महर्षि दयानन्द जीवन-चरित्र’ प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थ ‘सत्यार्थप्रकाश’ ने अविवेक, पाखण्ड, अन्धविश्वासों का दमन कर समाज में एक नई क्रान्ति ‘वैचारिक क्रान्ति’ को जन्म दिया। अतः परोपकारिणी सभा ने ७ वर्ष पूर्व ‘विश्व पुस्तक मेला’ दिल्ली में प्रतिवर्ष **‘सत्यार्थप्रकाश’** के साथ **‘महर्षि का जीवन-चरित्र’** एवं **‘आर्याभिविनय’** पुस्तक का वितरण करने की योजना बनाई, जो निरन्तर चल रही है।

एक सैट की छपाई का खर्च लगभग १५० रु. आता है। ५०० **से कम प्रतियों पर स्टिकर लगाकर तथा ५०० या अधिक प्रतियों पर दानी व्यक्ति का नाम छपवाकर वितरित किया जाएगा।**

१५० रु. प्रति सैट के अनुसार आप दान देकर अपनी ओर से, अपने नाम से पुस्तक वितरित करा सकते हैं।

अपने दान के साथ ‘सत्यार्थप्रकाश वितरण’ अवश्य लिख देवें, और साथ ही अपना नाम एवं पता भी। यह दान आप परोपकारिणी सभा के खाते में ऑनलाइन, चैक द्वारा या फिर परोपकारिणी सभा के पते पर मनिऑर्डर भी कर सकते हैं।

न्यूनतम	२० प्रतियाँ	३०००/- रु.
	३० प्रतियाँ	४५००/- रु.
	५० प्रतियाँ	७५००/- रु.
	१०० प्रतियाँ	१५०००/- रु.
	५०० प्रतियाँ	७५०००/- रु.
	१००० प्रतियाँ	१,५०,०००/- रु.

इस प्रकार जितनी अधिक प्रतियाँ बाँटना चाहें, उतनी राशि दूरभाष संख्या के साथ भेज देवें। धन्यवाद।

- कन्हैयालाल आर्य, मंत्री, परोपकारिणी सभा

सभा प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु

बैंक विवरण

खाताधारक का नाम

परोपकारिणी सभा, अजमेर

(PAROPKARINI SABHA AJMER)

बैंक का नाम

भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-

10158172715

IFSC - SBIN0031588

UPI ID : PROPKARNI@SBI

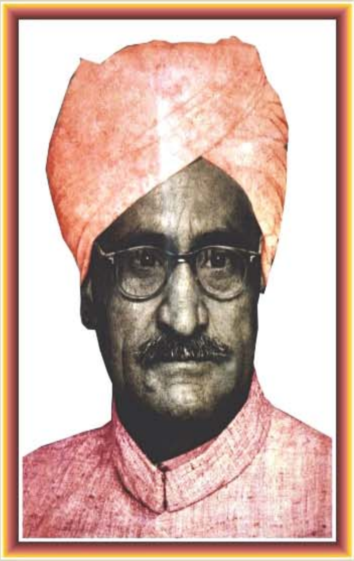

श्री जगदेव सिद्धांती जी

समाज सुधारक, सांसद
और संस्कृत एवं वेदों के प्रकांड विद्वान

जन्म : 3 अक्टूबर 1900
मृत्यु : 27 अगस्त 1979

परिचय

उनका जन्म 1900 में विजयादशमी के दिन हरियाणा के झज्जर जिले के बरहाना (गुगनान) गाँव में चौधरी प्रीत राम अहलावत के परिवार में हुआ था। उनकी माता का नाम मामकौर था। वे 1917 में सेना में भर्ती हुए, लेकिन चार साल बाद उन्होंने सेना छोड़ दी। बाद में उन्होंने संस्कृत सीखी और सिद्धांत भूषण की उपाधि प्राप्त की और अपना उपनाम सिद्धांती रख लिया। वे संस्कृत और वेदों के प्रकांड विद्वान बन गए। उन्होंने आर्य महाविद्यालय किरथल में प्रवेश लिया। रघुवीर सिंह शास्त्री उनके शिष्य थे। सिद्धांती ने 1934 में शेखावाटी के किसानों को जागृत करने के लिए सीकर जाट प्रजापति महायज्ञ में भाग लिया था। वे 1950 में सौरम सर्व खाप पंचायत के प्रधान बने। 1962 में वे झज्जर से सांसद चुने गए। हरियाणा राज्य के गठन के लिए किए गए संघर्ष में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। 27 अगस्त 1979 को उनका निधन हो गया।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी व्रतानन्द जी और पंडित उदयवीर जी शास्त्री आदि आर्य समाज की महान विभूतियों के साथ श्री जगदेव जी सिद्धांती।

आर जे/ए जे/80/2024-2026 तक प्रेषण : २९-३० सितम्बर २०२५ आर.एन.आई. ३९५९/५९

।। ओ३म् ।।

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्वावधान में

१४३वाँ ऋषि बलिदान समारोह

कार्तिक कृष्ण चतुर्थी से षष्ठी, संवत् 2082 तदनुसार

दिनांक 10, 11, 12 अक्टूबर 2025, शुक्र, शनि, रविवार

प्रेषकः

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज,

अजमेर (राजस्थान) ३०५००१

सेवा में,

डाक टिकिट